50
अमर बलिदानी
ऊधम सिंह
हरी नारायण तिवारी

"अनुत्तरदायी ! जल्दबाज ! अधीर ! आदर्शवादी ! लुटेरे ! डाकू, हत्यारे ! अरे ओ दुनियादार तू किस नाम से किस गाली से विभूषित करना चाहता है । वे मस्त हैं, दीवाने हैं । वे इस दुनिया के नहीं हैं । वे स्वप्नलोक की विथियों में विचरण करते हैं । उनकी दुनिया में शासन की कटुता से माँ धारित्री का दूध अपेय नहीं बनता । उनके कल्पना लोक में ऊँच-नीच का, धनी-निर्धन का, हिन्दू-मुसलमान का भेद नहीं है । उसी भावना का प्रचार करने के लिए वे जीते हैं । इस दुनिया में उसी आदर्श को स्थापित करने के लिए, वे मरते हैं । दुनिया के पठित मूर्खों की मंडली उनको गालियाँ देती है। लेकिन वे सत्य के प्रचार गालियों की परवाह करते तो शायद दुनिया में आज सत्य, न्याय, स्वातंत्र और आदर्श के उपासकों के वंश में कोई नाम लेवा और पानी देवा भी न रह जाता है ।"

- गणेश शंकर विद्यार्थी

प्रताप के अग्रलेख का अंश
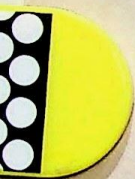
अमर बलिदानी

ऊधम सिंह

❋ खण्ड काव्य ❋

✍हरीनारायण तिवारी

❋ प्रकाशक ❋

डा० अम्बा शुक्ला

❑ **प्रकाशक**
डा० अम्बा शुक्ला
विहान
११६/५०१, सी-३, दर्शनपुरवा
कानपुर-१२

❑ **संस्करण**
स्वर्ण जयन्ती वर्ष १६६७

❑ **मूल्य** - ५१/-

❑ **लेजरटाईप सेटिंग**
ग्रॉफिक मीडिया
सिविल लाइन्स
कानपुर

❑ **मुद्रक**
पोरवाल प्रिंटर्स
दर्शनपुरवा
कानपुर
© 295732

* * *

फलीभूत हो कल्पना दिखी हुई साकार।
जननि-जनक आशीष का मिला अनोखा प्यार॥
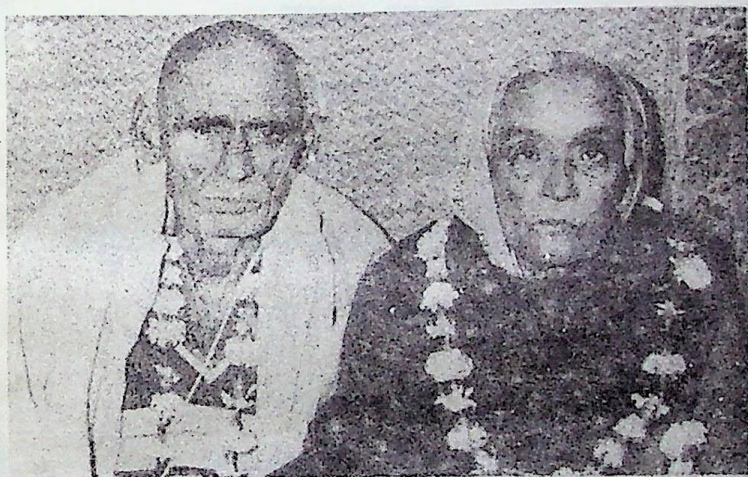
समर्पण

उन

पावन करों

में समर्पित है

जिनमें स्वराष्ट्र के प्रति

अनुराग, जनमानस की सेवा भावना,

अन्याय, अत्याचार से

जूझने का

संकल्प एवं मानवीय

संवेदनाओं के

प्रति अथाह

प्रेम है

अपनी बात

आजादी की कीमत चुकाने में हमारे पूर्वजों ने क्या-क्या यातनायें नहीं झेली परन्तु उन्होंने ऊफ तक नहीं किया। प्रतीक रूप में अंडमान निकोबार द्वीप समूह की राजधानी पोर्ट ब्लेयर में सेलुलर जेल अभी तक मौजूद है। स्वतन्त्रता संग्राम के सैकड़ों योद्धाओं को इस भयानक जेल में जीवन के अनमोल वर्ष अमानवीय यातनायें सहते हुए बिताने पड़े थे। ये वे लोग थे जिन्होंने देश की स्वतंत्रता के लिये परिवार की सारी सुख सुविधाओं और भविष्य की रंगीन कल्पनाओं को हंसते-हंसते लात मार दी थी और इस जेल में भोगा था, अनेक वर्षों तक एकान्तवास, भयावह सन्नाटे में बन्द कैदियों को कोड़े मारे गये, हफ्तों भूखा रखा गया, दिन रात हाड़तोड़ मेहनत कराई गयी, फिर भी उन महान योद्धाओं ने हिम्मत नहीं हारी। उन्होंने आजादी की मशाल मन्दित नहीं होने दी। अंग्रेज सरकार स्वतंत्रता सेनानियों का मनोबल तोड़ने और समूचे देश का उत्साह खत्म करने के लिए ही उन्हें समुद्र पार ले जाकर तनहाई की कोठरियों में बन्द करती थी। भारत भूमि से एक हजार से भी अधिक किलोमीटर की दूरी देश के साथ देश भक्तों का सम्पर्क बिल्कुल खतम कर देती थी। समुद्र के गहरे नीले पानी के कारण अंडमान निकोबार का नाम काला पानी पड़ गया।

आजादी के दीवानों को न तो कभी मौत का डर सताया और न काला पानी का खौफ। जैसे जैसे स्वतंत्रता के योद्धाओं की हुंकार तीव्र होती गयी देश की जेलें लबालब भरने लगीं। १८६६ में अंडमान निकोबार में जेल का निर्माण शुरू हुआ जिसमें ६६८ तनहाई की कोठरियाँ बनाई गयीं। बीसवीं शताब्दी के प्रारंभिक वर्षों से ही स्वतन्त्रता सेनानी यहां कैदी बनाकर लाये जाने लगे थे। यहां पर कैदियों को तिलहन पेरने वाले पुराने काठ के कोल्हू में बैल के स्थान पर जोता जाता था। इस जेल के क्रूर अधीक्षकों में डेविड बैरी का नाम सबसे ऊपर था। काला पानी भेजे गये शुरूआती जत्थे में विनायक दामोदर सावरकर का नाम विशेष उल्लेखनीय है। उनको वीर सावरकर भी कहा जाता है। १८५७ के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम पर जो पुस्तक लिखी थी उससे अंग्रेज सरकार के होश उड़ गये और उन्हें जहाज पर लादकर काला पानी भेज दिया था। आज भी स्मृति के तौर पर उनका चित्र और उनके द्वारा रचित कविता 'भारत माता' दीवार पर सुरक्षित है।

सारे देश के कोने-कोने से लाकर कैदी यहां बन्द किये जाने लगे जिनमें प्रमुख रूप से शिव वर्मा, बटुकेश्वर दत्त, वीरेन्द्र कुमार घोष, बाबा सोहन सिंह, भाई परमानन्द, कमलनाथ तिवारी, गणेश्वर घोष आदि विशेष रूप से उल्लेखनीय है। अंडमान की सेलुलर जेल एक तरफ आदमी के ऊपर आदमी के क्रूरतम अत्याचार की याद दिलाती है तो दूसरी तरफ आदमी के साहस और अदमनीय साहस की प्रतीक बनकर प्रेरणा देती है।

'रोल्टबिल' यानी जिसमें वगैर किसी कानूनी कार्यवाही के गिरफ्तार करने और सजा देने की धारायें रखी गयी थीं, उससे सारे हिन्दुस्तान में चारो ओर से

क्रोध की लहरें उठने लगी थीं। यहां तक कि मेडरेट लोगों ने भी पूरी ताकत से उसका विरोध किया, फिर भी तीन साल के लिए रोल्ट कानून बन ही गया। यह तीन साल काफी उपद्रव के रहे। ब्रिटिश सरकार ने लोकमत के घोर विरोध के बावजूद ऐसा कानून बनाया जिसका उद्देश्य सिर्फ झगड़ा करना ही था। १६१६ के आरंभ में गांधीजी ने वाइसराय से आग्रह किया था कि वे रोल्टबिल पास न करे लेकिन उनकी इस अपील की कोई सुनवाई नहीं हुई। परिणाम स्वरूप गांधी जी को भारत व्यापी आन्दोलन और सत्याग्रह चलाने पर विवश होना पड़ा। इसी श्रृंखला में जलियांवाला बाग में रोल्टबिल के विरोध में आयोजित सभा में नरसंहार का नंगानांच हुआ।

भारतवर्ष की पराधीनता के प्रति यहां के प्रत्येक नर-नारी, बाल-युवाओं का अंतःकरण आक्रोशित तो था ही, इन्हीं भावनाओं को नेतृत्व प्रदान करने हेतु कुछ नायकों, बलिदानियों ने वीणा उठाया तथा देश के कोने-कोने से सुसुप्त भावनाओं को आत्मोत्सर्ग हेतु उत्प्रेरित किया। नरम दल और गरम दल से पहचाने जाने वालों का उद्देश्य एक ही था 'भारत की पूर्ण स्वतंत्रता' और दोनों दलों ने अपने-अपने ढंग से देश के लिए संघर्ष किया। स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए किसी एक दल को श्रेय देना समीचीन न होगा। दोनों ही धाराओं का महत्व स्वीकार किया जाना चाहिए।

आजादी के महासंग्राम में ज्ञात-अज्ञात अनेक वीर देशप्रेमियों ने अपने प्राणों की आहुति देकर दीर्घकालीन महायज्ञ के प्रारम्भ से पूर्णाहुति तक की यात्रायें की थीं। देश के कोने-कोने से असंख्य स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों ने अपना सर्वस्व तक मातृभूमि की स्वतंत्रता के लिए न्यौछावर कर दिया था। जिनकी वास्तविक संख्या बता पाना आज तक भी संभव नहीं हो पाया है। कुछ जिज्ञासुओं ने इस संदर्भ में कार्य किये हैं, परन्तु यह अधूरा का अधूरा ही रहा और आने वाले भविष्य में भी पूरा होने की कोई संभावना दृष्टिगोचर नहीं होती प्रतीत हो रही है। अपने-अपने कार्य और धुन के पक्के सच्चे अनुरागियों ने प्रचार-प्रसार से दूर रहकर अपने उद्देश्य सम्पादन की सिद्धिलब्धता पर ही प्रकाश में आ सके थे।

इसी श्रृंखला के एक ऐसे विप्लवकारी पंजाब प्रान्त के सुनाम साहपुर ग्राम के नवयुवक का नाम, जिसके कार्यों पर देशवासी आज भी गर्व करते हैं, जिसका बाल्यकाल अनाथालय में बीता था, जिसने जीवन में माता-पिता का प्यार भी न पाया था, जिसके सिर से ममता का आंचल तक उठ गया था, जिसके मार्गदर्शन और आश्रय का स्थान अनाथ आश्रम रहा था, इन समस्त विषम परिस्थितियों को चीरता-नकारता हुआ लगन, कर्मठता, आत्मबल का धनी, साहसी जो एक ऐसे कार्य की योजना बनाने और उसे साकार करने हेतु निरन्तर चिंतन-मनन करता हुआ जीवन की उस दहलीज पर पांव रखा हो, जहां से उसके जीवन के संतप्त क्षण पराजित होकर आत्मसमर्पण हेतु सिर झुकाये आलिंगन को आकुल हों उसकी परवाह किये बिना अर्न्तचिन्हित रेखाओं को और बलिष्ठ घनिष्ठ करता रहा हो।

जिसने अमृतसर के गुरुद्वारा अनाथालय से दसवीं कक्षा उत्तीर्ण कर संसार सागर अवतरण की पहली सीढ़ी पर पग रखा ही था कि सरदार स्वर्ण सिंह द्वारा सर्वप्रथम जलियांवाला बाग काण्ड की लोमहर्षक दास्तान उस वीर बालक के कानों में पड़ी। जनरल माइकेल डायर द्वारा किये गये क्रूर, नृशंसतापूर्ण जघन्य

अपराध की घटना से उसका हृदय विदीर्ण हो गया और मन ही मन अकल्पित दृढ़ सुसंकल्प कर बैठा। इसे पूरा करने में वह अपने जीवन के छत्तीस वर्षों की कठोर साधना से सैंतीसवें वर्ष में सफलता प्राप्त कर हर्ष और उल्लास से गर्वान्वित हुआ। भारत से अमेरिका, सोवियत संघ और लंदन तक की यात्रा और साथ ही साथ इंजीनियरिंग की शिक्षा ग्रहण करते हुए अपने वांछित अभियुक्त को जब तक मौत के घाट नहीं उतार दिया, चैन की सांस नहीं ली थी। लंदन के कैक्सटन हाल में ओ डायर पर गोली चलाने से सर जेटलैण्ड, परसीसेक्रीज, लुईस डान, लार्ड लेमिन्गटन को घायल कर मातृभूमि की बलिबेदी पर अपने को बलिदान कर लिया था, उसका नाम था मुहम्मद सिंह आजाद उर्फ ऊधम सिंह।

जनरल डायर ने अपने साथ लाये सशस्त्र सिपाहियों के साथ बाग के द्वार पर मोर्चा लगा अंधाधुंध गोलियां चलाकर निहत्थे उत्साही लोगों को मौत के घाट उतार दिया था। लंदन पहुंचने पर ऊधम के सज्ञान में आया कि जनरल डायर मर गया है, जिसके लिए ऊधम सिंह को घोर पश्चाताप हुआ। इस आघात के प्रति उसकी अन्तर्भावना दृष्टव्य है -

"माइकल को न मार पाया हाय जीवन में, इतनी कहानी तो विसूरी रह जायेगी।
हंउसला संजोये अर्मानों की कड़ी में एक, अरमान की ये मजबूरी रह जायेगी।
पार कर दूरियां ठिकाने आ गया था किन्तु, माव और कर्म की ये दूरी रह जायेगी।
डायर को डायरी सिखाने को चला परन्तु यज्ञ की ये आरती अधूरी रह जायेगी।"

संयुक्त प्रान्त पंजाब का तत्कालीन गवर्नर ओ डायर लंदन में निवास कर रहा था, जिसने जलियांवाला बाग दमनकाण्ड करने हेतु जनरल डायर को निर्देश दिया था। अन्ततः इसको मारकर अपने प्रतिशोध का बदला चुकाया था।

चूंकि विप्लवकारियों का प्रारम्भिक जीवन इतिहास खोज पाना दुरुह होता है और तमाम भ्रान्तियों को स्थान मिलने की संभावना रहती है। मैंने अनेक पत्र-पत्रिकाओं, पुस्तकों का अनुशीलन करके प्रस्तुत खण्ड काव्य 'माँ भगवती की कृपा' से पाठकों के समक्ष लाने का प्रयास किया है। घटनाओं के शत्-प्रतिशत शुद्धता का दावा करना उचित नहीं होगा, फिर भी जहां तक संभव हो सका है, खोजने का प्रयास किया है। घनाक्षरी छन्दों के माध्यम से उन तमाम मातृभूमि के पुजारियों की भावनाओं को स्पर्श करने का प्रयास मात्र भर किया गया है। जलियांवाला बाग काण्ड के शहीदों, मर्माहतों एवं असंख्य जनभावनाओं को ऊधम सिंह के कृत्य ने अवश्य कृतकृत्य किया था जो आगे आने वाले देश के अनुरागी भावुकों को प्रेरणा देता रहेगा।

रायल सेन्ट्रल एशियन सोसाइटी और ईस्ट इण्डिया एसोसिएशन के संयुक्त तत्वावधान में अफगानिस्तान विषय पर हो रही सभा के बीच हुई ओ डायर की हत्या के मुकदमे की कार्यवाही के कागजातों को अंधेरे में दबाकर रखने के सख्त निर्देश देते हुए कहा था कि भारत के बागी ऊधम सिंह के बयान का कोई अंश कहीं प्रकाशित नहीं किया जाना चाहिए। पिछले ५६ वर्षों पूर्व कार्यवाही के दस्तावेजों को ब्रिटिश सरकार के गुप्त रिकार्ड को मजबूत तालों के भीतर बंद रखा गया, जिसको अन्तर्राष्ट्रीय मानव अधिकार संगठन के महासचिव मोहिन्दर सिंह ग्रेवाल ने इधर सार्वजनिक किया है।

इन दस्तावेजों में ऊधम सिंह का इकबालिया बयान और उसका स्पष्टीकरण दर्ज किया गया है, और ये दस्तावेज ग्रेट इंग्लैण्ड स्थित इण्डियन वर्कर्स एसोसिएशन ने ब्रिटिश होम आफिस से प्राप्त किया था। ऊधम सिंह के पिता का नाम टेहल सिंह उर्फ छुहार सिंह और माता का नाम हरनाम कौर उर्फ नारायणी था।

घटना के दिन १३ मार्च १६४० को मेट्रो पालिटन स्पेशल कान्सटेबुलरी के इंस्पेक्टर रॉबर्ट विलियम स्टीवेन्स कैक्सटन हाल में स्पेशल ड्यूटी पर थे, उन्होंने ऊधम सिंह को पकड़ कर मैक विलियम नामक सार्जेण्ट को जाँच-पड़ताल हेतु सौंप दिया तथा उसने उसकी दाहिनी जेब से १७ राउण्ड बारूद, टाउजर्स की दाहिनी जेब से ८ राउण्ड बारूद और ओवरकोट की जेब से मोची चाकू (Cobbler Knife) प्राप्त किया। गन विशेषज्ञ रॉबर्ट चर्चिल के अनुसार रिवाल्वर की चेम्बर में गोली ढीली फिट होने के कारण दूर से वार करना सम्भव नहीं था तथा डायर की हत्या में प्रयुक्त गोली ६ से ८ इंच की दूरी से मारी गयी थी।

डाक्टर अर्नाल्ड हर्बर (Arnold Harber) के अनुसार सीने के पीछे पीठ में लगी दो गोली के कारण डायर की मृत्यु हुई। प्रधानमंत्री लार्ड चैम्बर लेन ने आम सभा में लोगों को बताया था कि कैक्सटन हाल की घटना हेतु भारत का ऊधम सिंह नामक व्यक्ति उत्तरदायी है। भारत के अन्य समाचारपत्रों ने घटना का विस्तृत विवरण प्रकाशित किया। 'दि ट्रिव्यून' ने इसे वीरतापूर्ण कृत्य लिखा जबकि इंग्लैण्ड के पत्रों ने इसे घृणित कार्य की संज्ञा दी।

१५ मार्च १६४० को ऊधम सिंह ने अपने मित्र जोहल सिंह को भेजे गये पत्र में अपना नाम मोहम्मद सिंह आजाद लिखा था। 'आजाद बनाम क्राउन' नामक मुकदमे की पैरवी के लिए शिव सिंह जोहल ने ३० मार्च को बनार्ड लिण्डर एण्ड कम्पनी, नार्थ बेम्बली नामक वकील किया। १ अप्रैल को माइकेल फ्रांसिस ओ डायर की हत्या के लिए ऊधम सिंह को दोषी करार किया गया। ब्रिक्सटन जेल में बंद ऊधम सिंह बार-बार भारतीय पत्रों, पुस्तकों को प्राप्त करने हेतु शिव सिंह जोहल को पत्र लिखता था परन्तु १४ अप्रैल तक उसको कोई पुस्तक देने की अनुमति नहीं प्रदान की गयी थी। ऊधम सिंह की प्रिय पुस्तक 'हीर वीरस शाह' थी। उसकी इच्छा यह थी कि मृत्यु के पूर्व वह उस पुस्तक पर अपनी शपथ ले सके।

ऊधम सिंह के बचाव हेतु जान हटचिंसन आई-ई-सीटन और कृष्ण मेनन ने पैरवी की परन्तु उसके विरुद्ध प्रत्यक्षदर्शी गवाहों 'ईस्ट इण्डिया कम्पनी के अवैतनिक सचिव सर फ्रैंक ब्राउन, सर परसी सेक्रीज, डाक्टर व गन विशेषज्ञ, पुलिस अधिकारी, कई महिलाएं व पुरुष जैसे क्लाउड बिन्थम, हरी रिचेज, मेजर रिजीनाल्ड, अल्फ्रेड स्ली, मिस बर्था हेरिंग, मिस मार्जोरी इसाबेले, मिचेल असर, कर्नल कार्ल हेनरी रेन होल्ड, मारगर्ट सेफर्ड जान, हैरोल्ड स्मिथ, अन्थनी लारेन्स रेनार्ड, डोनाल्ड फिश, विलियम ब्रे, गाडफ्री डेनिल बेनल, फ्रांसिस हीले, जॉन स्वेन और सर बरनार्ड हेनरी स्पिल्स बरी के कारण बचाया न जा सका। फलस्वरूप वह ३१ जुलाई १६४० को वीरगति प्राप्त कर अमर हो गया।

भारत के इस अमर पुजारी की शहादत को मेरे मन की माटी ने बीज रूप में संजोकर रखा था। अनुकूल स्थितियों की प्रतीक्षा में अंकुरण का समय अब

आ पाया। सुदीर्घ अवधि तक जिस चिन्तन के भावों की सघनता में अनुभूतियों को अभिव्यक्ति का शब्द स्वरूप दिया है उसमें ऊधम सिंह से सम्बन्धित जानकारियों को उपलब्ध कराने वाले विभिन्न स्रोतों का आभार भाव मेरे मन में है। प्रमुख इतिहासकार स्वर्गीय जगदीश गुप्त 'जगेश' के मार्गदर्शन के अतिरिक्त सिख मिशनरी कालेज लुधियाना और सिख बुक सेन्टर गोविन्द सिंह स्टडी सेन्टर लुधियाना के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन करना अपना कर्तव्य मानता हूँ। इनके सहयोग से ही मुझे 'लेटर्स आफ ऊधम सिंह' नामक पुस्तक मिली जिससे पूर्व अर्जित ज्ञान को कथानक का रूप देने में सहायता मिली।

मैं अपने अन्यान्य गुरुजनों, मित्रों, सहयोगियों, सहकर्मियों तथा इस विषय से सम्बन्धित पत्रों, पत्रिकाओं का भी हृदय से आभारी हूँ जिसने मुझे बहुविधि इस ज्ञान यज्ञ को पूर्ण करने में सहायता की है।

अपनी तोतली भाषा में पाठकों के समक्ष विचारों को परोसने के प्रयास को यदि किंचित भी सफल समझा गया तो इसका श्रेय मेरे साथियों, शुभचिन्तकों को जाना चाहिए और इसमें त्रुटियों के लिए उत्तरदायी हैं मेरी अपनी अनभिज्ञताएं।

हरी नारायण तिवारी

सन्देश

बंधुवर तिवारी जी,

आपने स्वतन्त्रता की स्वर्ण-जयन्ती के अवसर पर "उधम सिंह" की कुर्बानियों की गाथा पर एक खण्डकाव्य की रचना की है, यह जानकर मुझे प्रसन्नता हुई। उधम सिंह हमारे देश का एक ऐसा साहसी नवयुवक था, जिसने भारत के स्वाभिमान को अपने प्राणों का उत्सर्ग कर सुरक्षित रखा और निहत्थे-अहिंसक लोगों पर अँधाधुंध चलाई गयी गोलियों का बदला लेकर मातृ-चरणों का तर्पण किया।

मेरा विश्वास है कि आपकी रचना आधुनिक पीढ़ी के लिए प्रेरणादायक सिद्ध होगी।

शुभकामनाओं सहित -

आपका
शरण बिहारी गोस्वामी
कार्यकारी अध्यक्ष
उ० प्र० हिन्दी संस्थान
लखनऊ

कविवर श्री हरिनारायण तिवारी द्वारा विरचित "बलिदानी ऊधम सिंह" एक चरित्र प्रधान प्रबन्ध काव्य है, जिसमें देश के लिए बलिदान देने वाले स्वाभिमानी ऊधम सिंह का चरित्र बड़ी ही शोधपूर्ण चातुरी के साथ उकेरा गया है। आज देश को ऐसे प्रेरणादायक चरित्रों की महान आवश्यकता है।

कवि ने उन शताधिक बलिदानी राष्ट्रभक्तों का, जो समय की गहनतम परछाइयों में समसावृत हो विस्मरण के गर्त में ढकेल दिये गये हैं, स्मरण कर जो श्रद्धा प्रदर्शित की है वह सर्वथा सबके लिए वांछनीय है। कवि अपने उद्देश्य में पूर्णतः सफल हुआ है। सरस और ओजपूर्ण यह रचना नवयुवकों के लिए विशेष मंगलकारी मार्गदर्शिका है। कवि का यह प्रयास वंदनीय है, स्तुत्य है।

आशुकवि डॉ० गणेशशंकर शुक्ल 'बन्धु'
कानपुर

अभिमत

शहीद उधम सिंह के शौर्य-समृद्ध बलिदान को स्मरण कर लिखी गयी पण्डित हरिनारायण तिवारी की यह ओजपूर्ण काव्य-कृति देश-भक्ति और राष्ट्रभक्ति की नैसर्गिक प्रेरणा देने वाली है इधर कुछ समय से दूरदर्शनीय कार्यक्रमों में जैसे धार्मिक कथानकों का आग्रहण प्रबल हुआ है उसी प्रकार नयी कविता, अकविता और गीति-कविता के सोपानों को पार करती हुई हिन्दी कविता में भी राष्ट्र और देश के लिए आत्म बलिदान करने वाले, किसी सीमा तक उपेक्षित प्राय जैसी हुतात्माओं के प्रति भी रचनाकारों का आग्रह बढ़ा है और जीवन-मूल्यों के प्रति उपेक्षी से वर्तमान में यह एक शुभ लक्ष्ण है। आस्था जब त्याग, आत्मत्याग और अध्यात्म के प्रति अनुरागमयी बनती है तब अनायास ही लोक-संग्रह की निरंकुश महत्वाकांक्षाओं का-नियमन भी होता है और यह संसृति के लिये एक शुभ लक्षण होता है इस समय को हिन्दी साहित्य की विविध विधाओं, मुख्यतः काव्य में अपने नातिदूर अतीत के वीरों वीरांगनाओं को लक्ष्य कर इधर कई कृतियाँ प्रकाश में आई हैं। श्री तिवारी की यह कृति उसी संस्कारवती परम्परा की एक काव्योलब्धि है जिसे 'अभ्यर्चन', 'अंकुर', 'शैशव', 'प्रयाण' साधना' 'अनुशीलन' और 'अमर' नामक संर्गों में बांटकर सौ से अधिक घनाक्षरी छन्दों में लिपिबद्ध किया गया है। कथानक तो नति विशाल है पर कवि की विशालता इसमें है कि प्रतिशोध को धर्म मानने वाले ऊधम के साथ पाठक का तादात्म्य स्थापित होना सर्वथा सहज प्रतीत होता है। प्रतिशोध की भावना जब मातृभूमि के लिये होती है तब वह यज्ञ का पावन अभिधेय बन जाती है। श्री हरिनारायण की कृति में यहाँ ऐसा ही सम्भव हुआ दिखाई देता है, श्री तिवारी तथा अन्य ऐसे ही सुकवि में से और भी काव्य सन्दर्भों को खोजकर लाये और अपनी उत्तरोत्तर प्रतिभा का परिचय देते चलें तो असंशय ही हमारा भविष्य उज्जवलतर होगा।

सेवक वात्स्यायन

भू० पू० हिन्दी विभागाध्यक्ष

क्राइस्टचर्च कालेज कानपुर

एफ-१३, किदवईनगर कानपुर-११

सम्मति

डा० रामस्वरूप त्रिपाठी

पूर्व हिन्दी विभागाध्यक्ष डीएवी कालेज कानपुर

आज देश स्वतन्त्रता की पचासवीं वर्षगाँठ मनाकर गौरवान्वित हो रहा है। गौरव होना भी चाहिए क्योंकि सदियों की दासता से मुक्ति जो मिल गयी है। इस स्वतन्त्रता के लिए सन् १८५७ को भुलाया नहीं जा सकता। एक प्रकार से वह प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम था। उस समय तो इसको अंग्रेजी सरकार ने अपने दमन-चक्र से कुचल दिया था किन्तु वह चिनगारी धीरे-धीरे सुलगती रही। बंग-भंग के कारण यह चिन्गारी प्रज्ज्वलित होने लगी। भारत से ही नहीं भारत से बाहर भी स्वतन्त्रता के बीज बोये जाने लगे थे। मदाम कामा का योगदान सराहनीय था। समय बीतता गया और राजनैतिक चेतना जागृत होती रही। भारतवर्ष में 'गरम' और 'नरम' दल बन गये। गरम दल एक प्रकार से क्रान्तिवीरों का इतिहास बन गया।

अंग्रेज शासकों का दमनचक्र क्रूरतम होता चला गया। जाने कितने स्वतन्त्रता के परवानों को गोलियों से भून दिया गया, न जाने कितनों को फाँसी पर लटकाया गया। माताओं की गोदें सूनी हो गयीं। बहनों की सजी सजाई राखियाँ धरी की धरी रह गयीं। माँ-बहनों, बहू और बेटियों की अस्मत लुटती रही, लुटती ही रही मानवता चीत्कार कर उठी। इतना सब कुछ सहने के पश्चात् तब कहीं स्वतन्त्रता के दर्शन हुए।

आज हम स्वतन्त्र अवश्य हो गये हैं परन्तु ; हाय री विडम्बना अब ५० वर्षों के बाद भी देश की जो दुर्दशा और दुर्गति, हमारे अपनों के द्वारा हो रही है और भी पीड़ादायक है। जिनको हमने अपना रक्षक बनाया वही आज तक्षक के रूप में हमारे भक्षक बन गये हैं। अनैतिकता, अत्याचार, भ्रष्टाचार, कदाचार का ताण्डव हो रहा है। हम अपने वीर शहीदों की शहादत को भुला बैठे हैं। "शहीदों की मजारों पर लगेंगे हर बरस मेले" यह कथन किताबी रह गया है। "सरफरोशी की तमन्ना" रखने वालों को भुला दिया गया है। स्वतन्त्रता सेनानियों की जमात में न जाने कितने रंगे सियार (श्रृगाल) घुसपैठ कर चुके हैं। अब ऐसी स्थिति में भारतीय संस्कृति और उसकी अस्मिता पर पुनः काले बादल मँडराने की सम्भावना बढ़ने लगी है। भारतीय मनीषा को पुनः झकझोरने और सचेत करने की महती आवश्यकता प्रतीत होने लगी है।

अब समय आ रहा है जब कलमकारों को यह सोचना पड़ेगा

"अभी तक प्रणय के बहुत गीत गाये,
सखे अब प्रलय गीत गाना पड़ेगा।"

अब कवि को अपना स्वर मुखरित करना ही पड़ेगा। उसको यह सोचने के लिए विवश होना पड़ेगा कि भारत के भविष्य के साथ खिलवाड़ न किया जाय। इसके लिए उसको तेवर बदलना भी पड़े तो वह पीछे न हटे।

इसी बदले हुए तेवर के साथ कुछ कलमकार आगे आ भी रहे हैं। पं. हरिनारायण तिवारी द्वारा लिखित कृति 'अमर बलिदानी ऊधम सिंह' शीघ्र ही प्रकाशित होने जा रही है। यह पुस्तक 'अभ्यर्चन', 'अंकुर', 'शैशव अभियान', 'प्रयाण', 'अनुशीलन', 'अमर पर्व' नामक सात सर्गों में विभक्त घनाक्षरी छन्द में लिखी गयी है। शहीद ऊधम सिंह के विषय में जितनी जानकारी कवि ने की है वह इस अमर सेनानी के प्रति कवि क़ी निष्ठा ही है। जलियाँवाला बाग काण्ड के विषय में सुनकर ही बालक ऊधम सिंह के मन में जुनून सवार हुआ। ऊधम सिंह के जीवन का एक ही लक्ष्य था प्रतिशोध। डायर को मारकर ही उसको शांति मिल सकी। डायर से बदला लेने के लिए उस नर-नाहर को कितने कष्ट उठाने पड़े थे यह तो वही समझ सकता था।

कवि ने इस साहसी युवक की भावनाओं को उद्घाटित करने हेतु उसकी भावनाओं से तदाकार होने की भरसक चेष्टा की है। कवि की सच्ची भावुकता का एक गुण विषय वस्तु से तदाकार होना भी है। कवि की भाषा भावाभिव्यक्ति में सहायक सिद्ध हुई। हरिनारायण जी तिवारी पूर्वांचल की माटी में खेले-खाये और बड़े हुए हैं। अतः वहाँ की भाषा का प्रभाव स्थान-स्थान पर देखा जा सकता है। भले ही उसमें व्याकरण के पंडितों को दोष दिखें परन्तु कविं उस अंचल की भाषा से असंपृक्त कैसे रह सकता था।

हरिनारायण तिवारी हमारे शिष्य भी रह चुके हैं अतः मुझे ज्ञात है कि विद्यार्थी जीवन से ही वह विद्या व्यसनी, उद्योगी, सदाचारी, कर्मनिष्ठ, विनम्र और शीलवान रहे हैं। घर के छोटे-छोटे शिशुओं की तोतली और अस्पष्ट शब्दावली बड़ों को आह्लादित करती है वही स्थिति मेरी भी है। काव्य-श्रृंखला की दृष्टि से इस कृति की न्यूनाधिक त्रुटियाँ भी मुझे आनन्दित करती हैं। मेरे अन्तःकरण को यह आभास होने लगा है कि चि० हरिनारायण तिवारी का कवि निरन्तर परिपक्वता को प्राप्त करता हुआ उत्तरोत्तर विकास की ओर अग्रसर होता रहेगा। यह बात मैं इसलिए कह रहा हूँ कि इस कृति के कई छन्द हृदय को स्पर्श करते हैं।

कानपुर नगर प्रचुर मात्रा में साहित्य सर्जन कर रहा है यह शुभ लक्षण है। जिनको हम जान-बूझकर भुलाने की चेष्टा कर रहे थे अब उन हुतात्माओं के प्रति कविगण सजगता से लेखनी चलायेंगे ऐसा प्रतीत होने लगा है। कवि हरिनारायण तिवारी मात्र ऊधम सिंह का आख्यान लिखकर ही विराम न लगा दें वरन् भविष्य में कतिपय अन्य अनूठी रचनाओं से साहित्य श्री की अभिवृद्धि करते रहें, यही हमारी उनसे अपेक्षा है। मैं परम प्रभू से कामना करता हूँ कि कवि हरिनारायण तिवारी को वह शक्ति प्रदान करें जिससे हमारी अपेक्षा पूर्ण हो सके। कवि को इस कृति के लिए साधुवाद एवं बधाई।

सद्भावी
रामस्वरुप त्रिपाठी

इतिहास के अंधेरे में अमर शहीद सरदार ऊधम सिंह और पं० हरी नारायण तिवारी का भाव बोध

भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन का सुनियोजित क्रान्तिदर्शी स्वरूप १८५७ के विद्रोह से ही प्रारम्भ हो चुका था। अंग्रेजी शासकों की बर्बरता और क्रूरता ने तोप और तलवारों के बल पर हजारों देश भक्तों का जो नर संहार किया था, उन्हीं बलिदानियों के रक्त ने बीज बनकर समय आने पर एक नई फसल को जन्म दिया। अमर शहीद भगत सिंह, चन्द्र शेखर आजाद, पं० राम प्रसाद विस्मिल और अशफाक उल्ला खां तथा खुदीराम बोस - योगेश चन्द्र चटर्जी - जैसे असंख्य देश भक्त वीरों ने अपनी सम्पूर्ण प्राण ऊर्जा भारत माता के चरणों में अर्पित कर दी।

राष्ट्र के सम्मान और स्वाधीनता की बलिवेदी पर बलिदान होने वाले वीरों की इसी परम्परा में शहीद ऊधम सिंह का नाम अपने में एक अलग ही परिदृष्य उपस्थित करता है, जो हिन्दी साहित्य में अभी तक अभिव्यक्ति की किसी भी विधा में लेखनी का वह स्पर्श नहीं पा सका था - जो अपेक्षित था।

पं० हरि नारायण तिवारी ने माँ भगवती के मन्दिर में अपने ओजस्वी शब्द सुमनों के जो स्वर निवेदित किये हैं, निसंदेह वह अनूठे हैं, उनमें वीरता, धीरता, गंभीरता तथा साहस और बलिदान के शाश्वत-चिन्तन की महक है।

कवि की मनोभूमि-जलियाँ वाले बाग के नर संहार और उसकी प्रतिक्रिया से पूर्णतयः अभिसिंचित है। पर उसकी उर्वरा शक्ति का समायोजन, देश की तत्कालीन निरंकुश ब्रिटिश शासन और सत्ता के विरोध में उठ रहे जन-जन के मन तक पहुंचाने का प्रयास करने वाले इस बिम्ब विधान में देखें, जहां चारो ओर से घिरे असहाय लोगों की निहत्थी भीड़ पर, जनरल डायर के नृशंसता पूर्ण कृत्य ने हाहाकार मचा दिया है -

भागते तो भागते कहाँ को किस ओर सब
फाटक से बरस रही थीं आग गोलियाँ।
लाश पर लाश गिरी अंग भंग हुये कुछ।
मारो-मारो और मारो बोल रहा बोलियाँ।
चारों ओर खून-खून पसरा था, बाग बीच
भूखे भेड़ियों की मन मानी बढ़ी टोलियाँ।
लाशों से भरा था, घायलों से भरपूर थल
लाल लाल दिखी हर माथे लगी रोलियाँ।

पंजाब और सिख-कौम का इतिहास अन्याय और अत्याचार के विरुद्ध, संघर्ष का सदैव ही पक्षधर रहा है। इस महान परम्परा में प्रारम्भ से ही मानवता के प्रति करुणा और प्रेम का जो पाठ पढ़ाया गया है, उसका ही यह प्रभाव रहा है कि न तो अन्यायी को, न अन्याय को, किसी भी प्रकार सहन किया जाये, तभी तो जलिया वाले बाग के क्रूर कृत्य को अक्षम्य मान कर कवि ने आतताइयों के विरोध में पूजनीय सिख सन्तों का पुण्य स्मरण करते हुए कहा है -

शोषित दलित थे समाज के निराश अति
घृणा-द्वेष व्यापक प्रभाव भी जमा चुकी ।
क्षरण सजगता का हो रहा था नित्य-नित्य
अत्याचारियों की भीरु धाक भी जमा चुकी ।
छुआ छूत ऊंचनीच भेदभाव भावना ने,
लालसा नवेली ताम-झाम भी जमा चुकी ।
उस काल आये समता भी छिन्न-भिन्न जब
वेदना निगोड़ी अलगाव भी जमा चुकी ।

ऐसी विषम स्थिति में मानवता के कल्याण हेतु जिस गुरु परम्परा का निर्माण हुआ कवि ने इन शब्दों में स्मरण करते हुए कहा है -

नानक श्री गुरुदेव अंगद, अमरदास
ध्यान दिव्य ज्योति मनोयोग से जलाये थे,
गुरु रामदास अर्जुनदेव के वचन
हरगोविन्द, हरराय शक्ति से उठाये थे,
हरकिशन, गुरु तेग, पावन गोविन्द सिंह
जनता में धूम-धूम धूप भी मचाये थे ।
सौम्य अति सिख धर्म दस गुरुओं का ज्ञान,
ऊधम के मन कर्म वानी में समाये थे ।

सरदार ऊधम सिंह का बाल्यकाल अनाथालय में बीता था । वहीं से उन्होंने अपनी शिक्षा तथा संस्कार अर्जित किये थे, पर उनके बाल मन पर जलियां वाले बाग की वह खूनी याद गहराई तक अंकित हो गई थी, जिसके लिए उन्होंने अपने स्वाभिमानी चरित्र के निर्माण में कोई कसर नहीं आने दी । उन्होंने जनरल डायर से बदला लेने की- भावना से ही प्रेरित होकर सत्य की रक्षा के लिए हर प्रकार से परिश्रम पूर्वक, अमेरिका व इंग्लैंड तक की यात्रा की, इंजीनियर, ड्राइवर व बढ़ई के कार्यों में दक्षता प्राप्त की तथा अपने उद्देश्य भारत माता के अपमान का बदला लेने की सतत् चेष्टा करते रहे तभी तो -

क्रियाशीलता पे गर्व करता है देश सदा
प्रतिकूल जिनकी न सोच रहती कभी,
सैन्य शक्ति स्वावलम्बी एकता की पृष्ठभूमि,
आत्म बल की नहीं हुलास घटती कभी
निश्चय कठोर मृदुता में दृढ़ता को लिए
विक्षुब्ध बयार न कदापि बहती कभी
राष्ट्र स्वाभिमान आन, बान, शान, के निमित्त
पीछे पग जाने में न चाह रहती कभी ।

ऊधम सिंह दृढ़ प्रतिज्ञ, वीर, साहसी और कर्मठ देश भक्त थे । वह भारतीय संस्कृति के महान पुजारी और ईश्वर की सत्ता में विश्वास करने वाले एक इंसान थे । अपनी सोच में बदला लेने की भावना में प्रति हिंसा या किसी प्रकार की दलीय, जातीय या वर्ग विशेष की उन्हें कोई चिन्ता नहीं थी । परम धैर्य और वीरता का

प्रदर्शन करते हुए उन्होंने अंग्रेज शासकों को यह बता दिया था कि अंग्रेज यदि मानव हैं तो मेरा मानवता का उनसे सम्बन्ध है, किसी निरपराध की हत्या उनका उद्देश्य कभी नहीं रहा, पर आतताई को उसके किये का फल अवश्य मिलना चाहिए इसी के लिए जनरल ओ डायर की उन्होंने गोली मार कर हत्या कर दी तथा किसी व्यक्ति किसी दल या किसी विचारधारा सेअपने को सर्वथा अलग बताते हुए उन्होंने विचार व्यक्त किये थे कि वह शहीद भगत सिंह को अपना मार्गदर्शक मानते हैं, उसी परम्परा में उनका बलिदान देश की अस्मिता की रक्षा के लिए हो रहा है, अपने दूसरे जन्म में भी वह भारत माता और पीड़ित मानवता की रक्षा के लिए तत्पर रहेंगे। यद्यपि जनरल डायर मर चुका था पर उसके कृत्य के सहयोगी ओ डायर को मार कर ऊधम सिंह ने अपने प्रतिशोध को पूरा किया तथा दिखा दिया कि अपने देश से दूर, बिना किसी भी सहायता के उन्होंने जिस कार्य को पूरा किया है वह अंग्रेजों की शक्ति और सत्ता को हिला कर रख देने वाला है।

यहाँ कवि ने जवानी और जीवन के प्राण तत्व को कविता के जिन शब्दों का स्वरूप दिया है उनमें शौर्य के साक्षात उभरते बिम्ब दर्शनीय है -

मातृ भूमि लाल जो कि अस्मिता बचाने हेतु,
पहुंचा वहां वे धूल फांकता कहां कहां।
छाती बज्र की है, थाती देश अनुरागियों की,
गायेगा जमाना कीर्ति छायेगा जहां जहां।
होगा सरनाम क्रान्तिकारियों में एक और
गर्व से कहेगा मंत्र बांचता अहा अहा।
डायर ओ डायरी का पृष्ठ टूक-टूक किया
अट्टहास हँसी हँसा हँसता हहा-हहा।

अपने किये को, प्रासंगिक और न्यायपूर्ण बताते हुए ऊधम सिंह के विचारों का अवलोकन करें -

डायर को मारने से हत्या अभियुक्त नहीं,
इसे अति पावन सुकर्म मानता हूं मैं।
जड़ मूल रोग का उखाड़ना जरूरी इसे,
छूत की बीमारियों का जर्म मानता हूं मैं।
शाश्वत नियम आना जाना जग में प्रसिद्ध
क्रिया प्रतिक्रिया का ही टर्म मानता हूं मैं।
नियम है आपका न जानूं पहिचानूं उसे,
हत्या के लिए ही हत्या धर्म मानता हूं मैं।

उठा ऐसा बढ़ा किसी को न कुछ भान हुआ,
मात्र षट इंच दूरी से चला दी गोलियाँ।
शांत हलचल, क्षण बढ़ी हलचल फिर,
माथे पर देश भक्त ने लगाई रोलियाँ।

डायर तुरन्त धराशायी हो गया था नीच,
सारे सभासदों की भी बन्द हुई बोलियाँ ।
ऊधम के कृत्य की प्रशंसा हुई भारत में,
हुई अभिभूत क्रान्तिकारियों की टोलियाँ ।

जेल में ब्रिटिश शासकों ने ऊधम सिंह का नाम, मुहम्मद सिंह आजाद रख दिया था जिससे उसे फांसी दिये जाने पर भारत में कोई भीषण प्रतिक्रिया न हो । यहां इसी नाम से कवि अपने चरित्र नायक के मुंह से न्यायिक प्रक्रिया को अन्यायिक प्रक्रिया कहते हुए कहता है -

चिंतित नहीं हूं भयभीत भी कदापि नहीं
बरबस बरतानियों का हुआ काल हूं ।
गंदे औ घिनौने कूकरों को दुरियाने हेतु,
ओल्ड बेली क्रिमनल कोर्ट की मिशाल हूं ।
चला प्राण देने हेतु धरके पवित्र ध्येय,
ऐसा महा काल बन आ गया भूचाल हूं ।
मैं तो हूँ मुहम्मद आजाद सिंह नाम शुद्ध,
तेरी क्रूरता का ठाँव-ठांव पे सवाल हूँ ।

पक्ष कमजोर प्रति पक्ष की गवाहियों का
इसकी न लेशमात्र चिन्ता उसको रही ।
गर्व से मरेगा देश के निमित्त ऊधम ये,
पूर्ण कार्य करने में आस मन को रही ।
सबल प्रयत्न कर प्रतिशोध लेने हेतु,
खुश होंगे मेरे से अपेक्षा जिनको रही ।
मचा है बबेला यहाँ सजेगा सबेरा वहाँ
ताड़ बनने को अभिलाषा तिल को रही ।

श्री हरि नारायण तिवारी ने इतिहास के अंधकार में - धूमिल हो रहे - भारत माता के जिस वीर पुत्र की महिमा का गान वीर, ओज और समर्पण की अमर गाथा के रूप में गेय, गरिमा के स्वर प्रदान किये हैं उन छंदों की भाषा, शब्दों में छलकते भाव और अर्थों की गंभीरता है । वह उनके समर्थ कवित्व की शक्ति से ओत-प्रोत है । कथनों को कथानक के वितान में जिस ढंग से संजोया गया है वह श्रोता और पाठक को साहित्य के शाश्वत कर्तव्य-बोध से अनुप्राणित करती है । अनेक स्थानों पर ग्राम्य और प्रचलित शब्दों और मुहावरों का प्रयोग कथन की चारुता को, शिल्प और सौंदर्य के साथ ही, विषय की अभिव्यक्ति के अनुरूप संयोजित करने में समर्थ है ।

काव्य शास्त्रीय मूल्यांकन की दृष्टि से वीर रस में उत्साह स्थायी भाव के रूप में आस्वाद क्षमता का सृजन करता है । श्री तिवारी जी ने अपने चरित्र नायक में आलम्बन स्वरूप, उत्तम प्रकृति तथा विजेतव्य शत्रु के प्रति प्रदर्शित चेष्टाओं का, मनोभावों का, उद्दीपन-विभाव के रूप में प्रयोग किया है । अपने प्रयत्न के

प्रति जागरुकता और उद्देश्य की प्राप्ति हेतु साधनों के अन्वेषण-अनुभव रूप में प्रकट हुए हैं। धृति मति गर्व स्मृति तर्क रोमांच आदि को व्यभिचारीभाव के रूप में ग्रहण किया गया है। रचना में भाव प्रवणता, शब्द सामर्थ्य, अर्थ गंभीर्य तथा उद्देश्य की सफलता तक पहुंच कर कवि कृत कार्य हुआ है। सूत्र रूप में व्यक्त जगत और जीवन के सत्य मृत्यु, पुनर्जन्म और सतत् साहस तथा धैर्य के साथ आत्मानन्द में लीन-काव्य का नायक निःसंदेह अपने जन्म और जीवन के यथार्थ को सफलतापूर्वक निर्वहन करने में सफल रहा है।

भारत की परतंत्रता से अपमानित मनीषा ने स्वतंत्रता की प्राप्ति में क्रांति धर्मी कर्तव्य को चुना है उसका अपना महत्व असंदिग्ध है। केवल असहयोग आन्दोलन तथा अहिंसावादी दृष्टिकोण क्रूर धर्मा विदेशी शासकों को देश छोड़ने में मजबूर करने के लिए काफी नहीं था। क्रान्ति वीरों की बलिदान गाथा, शौर्य और साहस ने ही उन्हें भारत छोड़ने को मजबूर कर दिया था। पर अहिंसावादी अनेक इतिहासकारों ने क्रान्तिकारियों को जिस सुनियोजित ढंग से उपेक्षित किया है वह निःसंदेह प्रशंसा के योग्य नहीं है। मैं हिंसा और प्रतिहिंसा तथा प्रतिशोध के पाशविक विचारों का समर्थक नहीं हूँ। पर स्वतंत्रता की प्राप्ति के लिए जिन हुतात्माओं ने अपने कर्तव्य का पालन अपने ढंग से किया है उसकी उपेक्षा नहीं होना चाहिए थी।

अमर शहीद, निर्भीक, पत्रकार, गणेश शंकर विद्यार्थी सुलझे हुए, वास्तविक चिंतन के पक्षधर थे। उन्होंने सांप्रदायिकता असहिष्णुता अ र अत्याचार के विरुद्ध सदैव अपनी अन्तर्रात्मा की आवाज को अपने संपादकीय अग्रलेखों के माध्यम से जन-जन तक पहुंचाने का प्रयास किया था। वह अहिंसा के पुजारी थे। पर काकोरी केस के फैसले के पश्चात प्रताप के एक अग्रलेख में उन्होने लिखा था "अनुत्तरदायी ! जल्दबाज ! अधीर, आदर्शवादी ! लुटेरे ! डाकू, हत्यारे ! अरे ओ. दुनियादार तू किस नाम से किस गाली से विभूषित करना चाहता है। वे मस्त हैं, दीवाने हैं। वे इस दुनिया के नहीं है। वे स्वप्न लोक की वीथियों में विचरण करते हैं। उनकी दुनिया में शासन की कटुता से माँ धारित्री का दूध अपेय नहीं बनता। उनके कल्पना लोक में ऊँच-नीच का, धनी-निर्धन का हिन्दू मुसलमान का भेद नहीं है। उसी सम्भावना का प्रचार करने के लिए वे जीते हैं। इस दुनिया में उसी आदर्श को स्थापित करने के लिए वे मरते हैं। दुनिया के पठित मूर्खों की मंडली उनको गालियाँ देती है। लेकिन वे सत्य के प्रचारक गालियों की परवाह करते, तो शायद दुनिया में आज सत्य, न्याय, स्वातंत्र और आदर्श के उपासकों के वंश में कोई नाम लेवा और पानी देवा भी न रह जाता।" विद्यार्थी जी उन क्रान्तिधर्मी, न्याय परायण, देश भक्त हुतात्माओं की भावनाओं को न्याय देते हुए महिमा मंडित करने में कोई कसर नहीं छोड़ते वह आगे कहते हैं" नरम राजनीतिज्ञों की इस नीचातिनीच भावना को हम किन शब्दों में कोसें। भारत के विद्रोही नवयुवक समाज को काले कानूनों का विधाता कह कर उन्हें गाली देना उतना ही दौरात्म्यपूर्ण है जितना कि किसी चरित्रवती पतिव्रता स्त्री को व्यभिचारिणी कहना।" एक जगह पर विद्यार्थी जी के यह शब्द कि "दुनिया खाने, पीने, पहनने, ओढ़ने तथा उपभोग करने की वस्तुओं का व्यापार करती है। पर कुछ दीवाने चिल्लाते फिरते हैं" सर फरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है।" ऐसे

कुशल किन्तु औघड़ व्यापारी भी कहीं देखे हैं। अगर एक बार देख लें तो कृतकृत्य हो जायें।"

आज फिर हमारे देश में राष्ट्रीय स्वत्व और अस्मिता का क्षरण हो रहा है। पहले विदेशी अन्याय, अत्याचार, अनाचार करते थे। हमें और हमारी सांस्कृतिक अस्मिता का अपमान करते थे, अब हम राजनैतिक रूप से स्वतंत्र होते हुए भी अपने ही देश के राजनीतिज्ञों की कुटिल करतूतों से, निरन्तर और हर क्षेत्र में अवनति के गर्त में समाते चले जा रहे हैं। देश में अक्षमता, अविश्वास और धोखाधड़ी का साम्राज्य है। चरित्र और नैतिकता बीते दिनों की बातें हो गई हैं।

अब समय आ गया है जब देश की जवानी को, वर्तमान की नई फसल को अपने राष्ट्र की अस्मिता के लिए बलिदान हो जाने वाले शहीदों की याद करके, प्रतिज्ञा करनी चाहिए कि हम इस नवविकसित गुलामी के अपमान से अपने राष्ट्र को मुक्त करायेंगे। तभी उन महान देश भक्त वीरों के सपने साकार हो सकेंगे। उठो जागो और चलो समय दस्तक दे रहा है। उसकी आवाज सुनो।

श्री हरिनारायण तिवारी को उनकी काव्य साधना और शहीद ऊधम सिंह की प्रशस्ति गायन हेतु सम्पूर्ण शुभाशंसा।

डा० सूर्य प्रसाद शुक्ल

११६/५०१- सी-३ दर्शनपुरवा

कानपुर - २०८०१२

हार्दिक बधाई

ओजस्वी कवि एवं दैनिक "आज" के सुयोग्य पत्रकार श्री हरिनारायण तिवारी से मेरा लगभग २५ वर्षीय प्राचीन परिचय है। गत कई वर्षों से उन्होंने झांसी की रानी लक्ष्मीबाई और सरदार भगत सिंह आदि क्रांतिकारियों पर भी अनूठी रचनायें रची हैं। प्रस्तुत कृति में शहीद मोहम्मद सिंह आजाद अर्थात् क्रांतिवीर ऊधम सिंह पर रचित उनके छंद अपने में बेजोड़ हैं। ऐसी उत्तम घनाक्षरियां लिखकर महाभारत के कुरुक्षेत्र और भारत के क्रांति क्षेत्र कानपुर के महाकवि भूषण की परम्परा का विकास भी इसी महानगर निवासी कविवर हरिनारायण जी ने किया। क्रांतिवीर ऊधम सिंह ने अंतर्राष्ट्रीय बन्धुत्व की शिक्षा सोवियत संघ में जाकर ली थी, परन्तु जलियांवाला बाग के खून का बदला लंदन में डायर को मार कर लिया। इस तरह उन्होंने भारत राष्ट्र के गौरव को शिखर पर स्थापित कर दिया। आज जब फिर भारत अपने कुपूतों के कारण पराधीनता की ओर अग्रसर है तब श्री तिवारी जी ने स्वदेश के सच्चे सुपूत पर सफलतापूर्वक कलम चलाकर वास्तव में अभिनंदनीय कार्य किया है। पुस्तक प्रकाशन पर उन्हें और भी हार्दिक बधाई।

सुदर्शन चक्र
(स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी)
संस्थापक - 'समता साहित्य संसार'
बी० १३१, विश्व बैंक कालोनी,
बर्रा, कानपुर २०८०२७

प्रिय भाई तिवारी जी,

कानपुर महानगर की युवा पीढ़ी के मध्य वीर रस के कवियों का अभाव मेरे मन में बराबर खटकता रहा है जिसको आपने वीररस प्रधान खण्ड काव्य 'अमर बलिदानी ऊधम सिंह' की सर्जना करके समूल नष्ट कर दिया है। इसके लिये जितनी भी प्रशंसा की जाय कम है। कृति और कृतिकार को भरपूर साधुवाद।

बद्री नारायण तिवारी
सयोजक/संस्थापक
मानस संगम, शिवाला कानपुर

शुभाशंशा

मारीशस के प्रधानमंत्री डा० शिवसागर रामगुलाम विश्व भोजपुरी संस्था के गठन के समय कहलें कि भोजपुरी बहुत जीयत भाषा हवै। एके बोलै वाला आदमी आपन जरि सोरि कबौ ना विसारैला। ऊ कबौ नाहीं समुझैला कि तनी उज्जर कपड़ा पहिरे लगली त आपन धूरि माटी तुच्छ हो गइल।

ग्रियर्सन एक जगह लिखलें बाटे भोजपुरिया तमाशा कबौ देखेवाला नाहीं रहल ऊ जहां कहीं संघर्ष देखी कमजोरवा की ओर से कूदि परी आ बीचे धारा में कूदेला। पं. हरिनारायण तिवारी भोजपुरिया माटी में पैदा भइलें। आजादी कै स्वर्ण जयन्ती मनावल जात बा बाकी ऊधम सिंह जैसन बहादुर भारतीय जे जलियांवाला हत्याकाण्ड कै दोषी जनरल ओ डायर के ओकरे मातृभूमि लंदन में जाके अंगरेजवन के बीच में गोलियन से भूनि दिहलेन। ऐसेन बहादुर के ऊपर कौनौ साहित्यकार कै निगाह नाहिन पहुंचल। बाकी धन्य वाटै पं. हरिनारायण तिवारी जेकर निगाह ही नाही गइल बल्कि एक ऐसन खण्ड काव्य तैयार कइलें कि जैसेन कौनौ आजादी के दीवानन पर अबहिनले नइखे लिखाइल। ऐसेन कीर्ति खातिर साधुवाद।

राम नरेश त्रिपाठी
'नरेश भोजपुरी'
८, एल. आई. जी. इन्द्रा नगर,
कानपुर

प्रिय तिवारी जी,

ऊधम सिंह का बलिदान और राष्ट्र के प्रति उनका समर्पण सदैव स्मरणीय रहेगा।

उन पर लिखा गया खंड काव्य बड़े सम्मान और आदर से पढ़ा जायेगा। हिन्दी जगत में इसका भरपूर स्वागत हो, यही मेरी मंगल कामना है।

डॉ० गिरिजाशंकर त्रिवेदी
एम. ए. साहित्यरत्न, विधावाचस्पति
संपादक 'नवनीत' (हिन्दी डाइजेस्ट)
मुम्बई-७

कामना

राष्ट्र का चिन्तन, जिसके मन भाया हो
वह सुमन हो सुमन खिलाते रहो
कविता के कानन में, कानन तक
राष्ट्रीय भावनायें ऐसे ही सुनाते रहो

बी. एन. सिंह
७६/३८ ए, हालसी रोड कानपुर

*

उपलब्धियाँ मिले नित नूतन,
पौरुष अपराजेय रहे,
काव्य-यात्रा निष्कण्टक हो,
'अटल' मुदित मन यही कहे ।

दयानंद सिंह 'अटल'
११६/२७, नसीमाबाद, कानपुर-१२

*

यह नया काव्य भरे नव हर्ष, समृद्धियाँ जीवन में हरसायें ।
कामना काव्यमयी - ललितेश- प्रसिद्धियाँ कीर्ति कला मुस्कायें ।
सौख्य-शतायु भरे नव सिद्धि नई भावना भूरि नव ऋद्धियाँ लायें।
हे हरि- के मधु-रूप नरायण, ये मधुमास नव वृद्धियाँ गाये ।।

ललितेश मिश्र 'धूल'
वाणीरत्न, मदन सा० भूषण
रवीन्द्र नगर, यशोदा नगर
कानपुर ।

अटल बिहारी वाजपेयी
नेता, प्रतिपक्ष
लोक सभा

17/2 19 सितम्बर, 1997

प्रिय तिवारी जी,

आपका 29 अगस्त, 1997 का पत्र मिला, उत्तर में विलम्ब के लिये खेद है।

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि आपने सुप्रसिद्ध क्रांतिकारी सरदार ऊधम सिंह के जीवन और बलिदान पर एक खंड काव्य की रचना की है, जो शीघ्र ही प्रकाशित होने जा रहा है।

भारत को साम्राज्यवाद के चंगुल से छुड़ाने के लिये जिन क्रांतिकारियों ने अपने प्राणों की आहुति दी, इनमें सरदार ऊधम सिंह का नाम उल्लेखनीय है। उनके बलिदान के लिये देश हमेशा उनका ऋणी रहेगा।

आपने श्री ऊधम सिंह के सम्बन्ध में खंड काव्य लिखकर, उनकी जीवन गाथा को घर-घर पहुंचाने का जो प्रयास किया है उसके लिये आप बधाई के अधिकारी हैं।

मुझे विश्वास है कि काव्य रस-प्रेमियों द्वारा आपके खंड-काव्य का अवश्य ही स्वागत किया जायेगा।

आपका,

अटल बिहारी वाजपेयी

(अटल बिहारी वाजपेयी)

श्री हरी नारायण तिवारी,
आज प्रकाशन लि॰,
79/75, बांस मंडी,
कानपुर-208 001

44, संसद भवन, नई दिल्ली - 110 001 दूरभाष : 301 7470, 303 4285 (कार्यालय)
7, सफदरजंग रोड, नई दिल्ली - 110 011 दूरभाष : 379 4155, 301 3800 (निवास)
फैक्स : 301 6611

अनुक्रम

अभ्यर्चन

(१)

कान सुने महिमा थे तेरी अनुदारक जो,
उसी भावना से तुमको पुकारता हूँ माँ ।
अनभिज्ञ वृत्तियाँ दुलारती हैं आठो याम,
लीजिए उबार, तुमको पुकारता हूँ माँ ।
मातृभूमि की स्वतन्त्रता में जो विलीन हुए,
वीरता बखानो, तुमको पुकारता हूँ माँ ।
बुद्धि बल ज्ञान गरिमा प्रभूत संयम से,
सफल बनाओ, तुमको पुकारता हूँ माँ ।।

◆

(२)

भारत के उन सब लाड़ले सपूतन को,
अक्षरों को गूँथ हार पहनाने को चला ।
कीजिए समर्थ अर्थयुक्त भाव-भावन को,
नाम कीर्ति ध्वज आज फहराने को चला ।
भ्रमित हुए हैं निज स्वारथ में लिप्त तिन्हे,
देश अनुराग वृत्ति समझाने को चला ।
दीजिए प्रसाद वीणापाणि इस लेखनी को,
पीढ़ियों में तेजबल उमगाने को चला ।।

(३)

वीर बलिदानी कुछ जनम यहाँ पे लिये,
जो कि सम्पदा का पूर्ण ताल ठुकरा दिये ।
मोहित किया कभी न लालसा को किंचित भी,
सहज दुरुह के सवाल ठुकरा दिये ।
लोभ इतना था बस चाहते सुराज सब,
पिता, पुत्र, मातु का मलाल ठुकरा दिये ।
मानसिकता से सराबोर मातृभूमि हेतु,
भौतिक सुखों का मायाजाल ठुकरा दिये ।।

◆

(४)

मंगल[१] महान तात्यांटोपे, पेशवा,[२] जफर,[३]
रानी लछमी को सारा जग जानने लगा ।
देशभक्त वेश्यावीर नाम की अजीजन[४] थी,
फड़के[५] तिलक[६] से अतीत मानने लगा ।
दामोदर,[७] बालकृष्ण,[८] चाफेकर बन्धुओं से,
रैण्ड जो कमिश्नर भी मौत माँगने लगा ।
वासुदेव[९] हरी, महादेव रानाडे, अधीर,
द्राविण जासूस खोज-खोज मारने लगा ।।

(५)

विस्मिल, मदनलाल धींगरा, भगत सिंह,
असफाक, रोशन,[10] आजाद[11] को प्रणाम है।
सुखदेव, लाहिणी, राजेन्द्र, शिवराम हरि,
महावीर सिंह, प्रीतिलता को प्रणाम है।
मास्टर दा सूर्यसेन लाला लाजपत राय,
अमर शहीद जो गणेश को प्रणाम है।
हेमू कलियानी, देव, सुमन, औ हाजरा[12] को,
ऊधम सरीखे देशभक्त को प्रणाम है॥

◆

(६)

बरकतउल्ला खान, रासजी बिहारी बोस,
बाघा कहलाते थे यतीन्द्रनाथ[13] देश के।
सावर्कर सानी अति, राजाजी महेन्द्र सिंह,
खुदीराम, रामलाल भी सुभाष देश के।
घोष, सरला, जगरनाथ, शारदा, गणेश,
हरदयाल आदि थे विशेष इस देश के।
तैयब[14] किशनलाल, शिवाधार, हसरत,[15]
कमला,[16] हुसेन,[17] कुरबान हुये देश के॥

१. मंगल पाण्डे, २. नानाराव पेशवा, ३. बहादुर शाह जफर, ४. अजीजन बाई नर्तकी, ५. वासुदेव बलवन्त फड़के, ६. बाल गंगाधर तिलक, ७. दामोदर हरी चाफेकर, ८. बालकृष्ण हरी चाफेकर, ९. वासुदेव हरी चाफेकर, १०. ठकुर रोशन सिंह, ११. आजाद चन्द्रशेखर, १२. मातगिनी हाजरा, १३. यतीन्द्रनाथ मुखर्जी - जिनका नाम सुन अंग्रेजों की नींद हराम हो जाती थी। १४. अब्बास तैयब, १५. हसरत मोहानी, १६. कमला देवी, १७. कुर्बान हुसैन।

(७)

देशज असंख्य वीर बाकुरों के बीच के ही,

ऊधम शहीद की कथा बखानने चला ।

फलक बड़ा है क्रान्तिकारियों के जीवन का,

उसके सुकृत्य छन्दरस छानने चला ।

दीजिए आशीष ज्ञाताज्ञात नामधारी सब,

साहस, सुभक्ति सुविनीत माँगने चला ।

इसी के बहाने अभिनन्दन सभी का कर,

लेखनी के बल शौर्य कीर्ति आँकने चला ।।

प्रथम सर्ग

अंकुर पर्व

साधक के बल वीर प्रसूता हुई वसुधा गुण खान हमारी।
पूजित होती सदा उनसे यह पालक, पोषक, पावन कारी।
पांव पड़े पलना में सपूत जताते भविष्यत की उजियारी।
अंकुर ही बनते बड़े वृक्ष जो छाया प्रदान करें फलचारी॥

(८)

शोषित दलित थे समाज के निराश अति,
घृणा-द्वेष व्यापक प्रभाव थी जमा चुकी ।
क्षरण सजगता का हो रहा था नित्य-नित्य,
अत्याचारियों की भीरू धाक थी जमा चुकी ।
छुआ-छूत, ऊँच-नीच भेदभाव भावना पे,
लालसा नवेली ताम-झाम थी जमा चुकी ।
काल उस आये समता थी छिन्न-भिन्न जब,
वेदना निगोड़ी अलगाव थी जमा चुकी ।।

◆

(९)

पशु पक्षियों असंख्य जीव-जन्तुओं के पास,
देकर सजीवन समष्टि को संवारता ।
सतत निरन्तर जो थकता नहीं है कभी,
गतिशीलता की वृत्ति सबमें उभारता ।
सबल अबल में है समता प्रकाश पुँज,
पावन सुयश वसुधा पे है प्रसारता ।
उदित है होता नित्य नित्य दिनकर पूर्ण-
रश्मियों से जग के तिमिर को नकारता ।।

(१०)

भारत का एक लाड़ला है प्रान्त पनजाब,
उसमें बसा हुआ है गाँव जो सुनाम था ।
टेहल-नरायणी का एक परिवार वहाँ,
जीवन में जिसके अभाव ही अभाव था ।
माटी के सहारे नित माटियों से खेल-खेल,
संतति की लालसा ही मनका झुकाव था ।
मूड़ भर करता कमाई रात-दिन, किन्तु
उसपे निराशा का जमाव ही जमाव था ।।

◆

(११)

ऐसे परिवेश में पला हुआ प्रभात जहाँ,
जिसके निमित्त हुआ लोक धन्यधाम है ।
छली जाती छलना निराश है दिवस निशि,
कृषि कार्य का विशिष्ट होता पुण्य काम है ।
दिया है सपूतों को अकूत बल साहस जो,
ऐसी माँ वसुन्धरा के ललिल ललाम हैं ।
करम धरम का धनी धनेश लोकपति,
पावन पुनीत नाम ऊधम सुनाम है ।।

(१२)

लाल पगड़ी को देख पाँव फूल जाते और
सामने से भाग छिप जाते घर-घर में ।
मानो यमराज की सवारी आ गयी हो वहाँ,
आता दिन जाता चला चकर-पकर में ।
बड़े-बूढ़े डाँट देते कुछ भी न बोल लाल,
जाल में फँसोगे इसी बकर-बकर में ।
चौकीदार थाने का घुसा था उस गाँव बीच,
चरचा चलाती चले डगर-डगर में ।।

◆

(१३)

ऐसे संक्रमण काल में जो संताने हुई,
उनमें बहुत भीरू बहुतों में वीर थे ।
जाग उठा देश का जवान वृद्ध बाल, सब,
विष के बुझाये हुये बने सब तीर थे ।
दीन-दुखियों के हेतु मलय समीर, किन्तु
अत्याचारियों के लिये प्रलय समीर थे ।
वीरों बाकुरों की देह दुर्ग की प्राचीर जैसी,
दमदार ऐसे दमदार थे, फकीर थे ।।

(१४)

ऐसी अनजानी जानी ज्योति की निशानियों में,
बूँद-बूँद सुयश की, तन भीगते गये ।
आई भार बन विपदा कभी जो जिन्दगी में,
दीन-हीन वृत्तियों का बल छीनते गये ।
टूटी-फूटी छानियों में गाँव की किसानी बीच,
जैसे तैसे जीवन के दिन बीतते गये ।
दिया है विधाता लाल पूरी अभिलाषा अब,
वाहे गुरु, वाहे गुरु, मन्त्र पूजते गये ।।

◆

(१५)

पुत्तर पियारा प्रति उत्तर है दुखियों का,
मोद का खजाना खोज लायेगा यतन से ।
मंगल-सुमंगल करेंगे ग्रह खोटे सब,
आह का निदान ओज गायेगा पवन से ।
सुजन सुमन संत सफल करेंगे कार्य,
धीरज का धन रोज पायेगा मनन से ।
गुरुओं की महती कृपा है ग्रन्थ साहब की,
विमुख उसे मनोज ध्यायेगा वचन से ।।

(१६)

लोरियां कहानियां सुना-सुना जगाया नित्य,
भरता गया विभाव चेतन अयन में ।
पारस की प्रभुता बखानी समझाई गयी,
चित्त जागरुक किया जागन-शयन में ।
थी विचित्रता भी और गोरे बरतानियों की,
त्रास की विभीषिका थी नयन-नयन में ।
मारो-काटो लूट तोड़-फोड़ की खबर नित्य,
पराधीनता का क्लेष वयन-वयन में ।।

◆

(१७)

जीवन की गाड़ी सुख शांति से चलाने हेतु,
निकला सुनाम शाहपुर गाँव छोड़ के ।
टेहल बना है एक कम्बू रेलवे में आके,
क्रासिंग का चौकीदार वेदना मरोड़ के ।
शोषण, गरीबी औ गुलामी की कुठार धार,
जिन्दगी जिया था सारे अरमान तोड़ के ।
ज्ञान सिगनल का विधान से बंधा था किन्तु,
भारतीय सम्पदा संजोया जोड़-जोड़ के ।।

(१८)

जाड़े में जड़ाती लूह लपट जलाती तन,
बरखा सयानी भी भिगोती मंजु मन को।
आते पतझड़ नयी सृष्टि सर्जना के हित,
सुरभि सुरम्य महकाती अन-वन को।
पाते हैं बसन्त सुख सावन सलोना अति,
ताकते किसान बावरे से घन-घन को।
पड़ते हैं पाले पग छाले पड़ते हैं किन्तु,
उमग उछाह सरसाते छन-छन को।।

◆

(१९)

हरियर धरती नीरोगता विराजे नित्य,
भावना सुदेश की संजोये रहता सदा।
सहन है शीत-ताप बरखा प्रचुर घाम,
कामना यथेष्ठ की संजोये रहता सदा।
रिद्धियों व सिद्धियों में सतत प्रयत्नशील,
सामना की शक्ति को संजोये रहता सदा।
भूमि बलिदानियों से परती न पड़ती है,
साधना की सृष्टि को संजोये रहता सदा।।

(२०)

मातु-पितु हीन पाँच वर्ष का कुलीन शिशु,
जानता नहीं था किसी काज व अकाज को ।
नाटक नियति का निरन्तर नवीनता से,
किसके लिये बनाता कौन किस साज को ।
आपस में बातकर जान के अनाथ लोग,
कोसते थे क्रूर महाराज यमराज को ।
आया था बुलावा गुरुशरण में लीनता को,
ऊधम को सौंप गये, देश को, समाज को ।।

◆

(२१)

बालक अबोध अवरोधकों के हाथ पड़,
मातु-पितु प्यार की फुहार भी न पा सका ।
टेहल-नरायणी अकाल काल ग्रास हुये,
सुखद क्षणों का मनुहार भी न पा सका ।
दान पुण्य करके मनौतियों से पाया पूत,
याचित प्रकाश भिनसार भी न पा सका ।
सावन तो आया मनभावन बहुत किन्तु,
पुत्तर पियारे का विचार भी न पा सका ।।

(२२)

लोगों ने विचारा गुरूद्वारा ही सहारा अब,
देख-रेख बालक की वहाँ होना चाहिए ।
रहेगा-पढ़ेगा कुछ काम का बनेगा भाई,
जीवन संवारने को कोई कोना चाहिए ।
लाये कुछ चतुर सुजान अनुमान सुख,
कुल का चिराग इसको संजोना चाहिए ।
दाखिल कराके कहा सबने प्रसन्न मन,
ब्याज लालसा को न कदापि खोना चाहिए ।

◆

द्वितीय-सर्ग

शैशव-पर्व

नूतनता महिमा के सुअंक में उत्तमता अवगाहन जाती ।
सम्यक भावना और उमंग सयानप लक्ष्य अभेद मिटाती ।
जो पढ़ते कुछ सोच विचित्र पवित्र कथानक में उलझाती ।
शैशव की अभिलाषा समग्र दशो-दिशि में गुणगान कराती ।

(२३)

भाई बहनों का प्यार माता का दुलार मिला,
वो तो अनुराग के तड़ाग में नहा गया ।
समय-समय खेल, करता पढ़ाई खूब,
माई बाप खोया वहाँ, माई-बाप पा गया ।
सम्यक कुशाग्र बुद्धि, उन्नत ललाट देख,
शीघ्र अब लोगों के दिमाग पर छा गया ।
शोर मच जाता बालकों के बीच आता जब,
आ गया हमारा मित्र ऊधम है आ गया ॥

◆

(२४)

आश्रम में आने नव जीवन संवारने का,
बीसवीं सदी का वहा सातवाँ बरस था ।
आहपुर से उदय शाहपुरी ऊधम को,
लौह का अनोखा यह पारस परस था ।
काल चक्र के महान चक्रित क्रियाओं बीच,
नियति नटी के हिय अन्तर हरष था ।
लाल एक ऐसा मेरे आँचल ने पाया अब,
पराधीन माता का कलेजा भी सरस था ॥

(२५)

पालन हुआ, बढ़े, पढ़े अनाथ आश्रम में,
बुद्धि बल से भी कुछ धनवान हो गये ।
साहस संजोया देश राग बीज बोया बन्धु,
दीन दुखियों की शुचि मुसकान हो गये ।
शोर मच गया अंगरेजी राज्य के विरुद्ध
आततताइयों से अति सावधान हो गये ।
कारण समझ के निवारण की योजना में,
वन्देमातरम का सुरीला गान हो गये ।।

◆

(२६)

दीन दुखियों अनाथ साथियों के बीच रह,
हीन वृत्तियों का मूल नष्ट करता रहा ।
जीवन में कूट-कूट, भरता रहा हुलास,
अन्तरसुखी किताब नित्य पढ़ता रहा ।
क्रान्तिकारियों के कारनामे बीच-बीच और,
अत्याचारी शासकों के गान सुनता रहा ।
होकर विकल अंकुरित प्रतिशोध भाव,
युवा चित्त में विशेष भाव भरता रहा ।।

(२७)

छोटा बड़ा हर कोई चलता था साथ-साथ
समता सहजता का विपुल सनेश था।
सारा परिवार लगता था भरपूर और
बेसहारा भाव उनमें न लवलेश था।
कोई जानता न दीन-हीन उस बालक में
साहस प्रबल का अदम्य सन्निवेश था।
क्रान्ति इतिहास का वो एक था सुयोगी दिन
खालसा अनाथ आश्रम का सुविशेष था॥

◆

(२८)

पास कर मैट्रिक, अकेला हो गया था फिर,
छूट चला वहां का भी संबल सहारा था।
कारीगरी सीखी कुछ, साथ-साथ पढ़ने के,
नेह के नयन से समाज को निहारा था।
बोझिल थका सा किन्तु सहसा सचेतन हो,
घाव भरने की अवधारणा विचारा था।
स्वर्णसिंह ने सुनायी बाग की कहानी जब,
लाल हो गया था नेत्र जोकि कजरारा था॥

(२६)

बाग जलियाँ में जुटे सब थे मनाने पर्व,
भीड़ का अनोखा सुखकारी उनमान था ।
पुलकित मुदित प्रसन्नचित्त स्वागत में,
नया वर्ष आया ज्यों विशेष मेहमान था ।
वादन सुरीला सुरतान सुन नृत्य-गान,
मानवीय खुशियों से फूला आसमान था ।
सहम गया था देख हौंसला हुलास किन्तु
डायर का क्रूर मन पूरा सावधान था ।।

◆

(३०)

सोलह बरस के किशोर का है अंग-अंग
फड़क रहा था रोम-रोम अनुराग का ।
भारत वसुन्धरा अपाक करने में लिप्त,
महक खरीदने चला था शठ बाग का
जालिम की क्रूरता ठगा-ठगा विचारता सा,
नासापुट फफक रहा था उस नाग का ।
पास जलियां के घूम-घाम के बिताता दिन,
सामने दिखा तो दिखा शोला बन आग का ।।

(३१)

देख सुन क्रूरता निकृष्ट अंगरेजन की,
मानसिक वेदना विकार दो गुनीं हुई ।
और गहराइयों में जैसे-जैसे जाता गया,
पीर की प्रधानता प्रबल चौगुनीं हुई ।
देखा दीन-दुखियों की आंखों में निहारि जब,
आशा की किरण से निराशा नौ गुनीं हुई ।
कांप गया अन्दर से रोंगटे फड़क उठे,
राहत की बात-बात बातें सौ गुनीं हुई ।।

◆

(३२)

नववर्ष सिख हिन्दुओं का है पुनीत पर्व,
उसमें जुटी अपार भीड़ धर्म-धर्म की ।
चले बाग में हजारों लोग करने विरोध,
रउलेट एक्ट के अपाक अकरम की ।
नेतों की रिहाई हंसराज ने उठाई जब,
गेट की मशीन गन गोरा मन गर्द की ।
चारों ओर गोलियों की धांय-धांय हाय-हाय,
डावर के कृत्य ने तनिक भी न शर्म की ।।

(३३)

भागते तो भागते कहां को किस ओर सब,
फाटक से बरस रही थी आग गोलियां ।
लाश पर लाश गिरी, अंग भंग हुये कुछ,
मारो-मारो और मारो बोल रहा बोलियां ।
चारों ओर खून-खून पसरा था बाग बीच,
भूखे भेड़ियों की मनमानी बढ़ी टोलियां ।
लाशों से पटा था घायलों से भरपूर थल,
लाल-लाल दिखी हर माथे लगी रोलियां ।।

◆

(३४)

लेकर पचास रायफल धारियों को साथ
डायर गरूर में चला बड़े गरेज से ।
फायर किया सिपाहियों को हुक्म देते हुए,
जारी रहे फायर निरन्तर सवेग से ।
दमन दिखाओ अब, नाक में किये हैं दम,
फांस दूँगा ब्रिटिश के शासकी फरेब से ।
होंगे अरमान चूर-चूर क्रांतिकारियों के,
दूर कर दूंगा भय भाव दूर-दूर से ।।

(३५)

हड़बड़ मची निज प्राण को बचाने हेतु,
एक दूसरे को ठेल-पेल भागने लगे।
गड़बड़ हेतु थे जवान भरपूर लगे,
डायर की मंशा हिल-मिल आंकने लगे।
चक-चक मची हाय-हाय चिल्लहट हुई,
दिनमान में ही रात तारे ताकने लगे।
तड़-तड़ भड़-भड़ लोथ पर लोथ गिरी,
आहत तुरत पानी-पानी मांगने लगे॥

◆

(३६)

पानी बूंद-बूंद के लिए तरसते थे लोग,
पानी न पिलाने दिया ऐसा था हरामी वो।
खून चाट-चाट निज होठों को शहीद हुए,
प्यास को दिलाता आस, सुना न हरामी वो।
ऐसे कुछ मरे कुछ गोलियों की भेंट चढ़े,
टेक मान तनिक पसीजा न हरामी वो।
बूढ़े, बचकाने और युवा भी अधेड़ किन्तु,
चीख सुना, रहम जताई न हरामी वो॥

(३७)

घायल कराहते शवों के जो वीभत्स दृश्य,
ऊधम कहानी असहाय देखता रहा।
डायर के पतित घृणित कार्य के विरुद्ध,
मन को मसोस समझाय देखता रहा।
चित्त में चढ़ा था प्रतिशोध का विकल ज्वर,
आकुल क्षणों को अकुलाय देखता रहा।
देखूंगा भविष्य में वसूल लूंगा ब्याज मूल,
अभिप्रेत होके अभिप्राय देखता रहा ॥

◆

(३८)

पदवी पुरसकार पेंशन की लालच में,
डायर कुकृत्य पै कुकृत्य करता गया।
भेंट हित थैलियों की त्याग के नियम सब,
पाप की कमाई से मकान भरता गया।
अत्याचारियों की श्रृंखला में शर्मनाक एक,
डग-डग पांव पुलकित धरता गया।
मानी स्वाभिमानी बलिदानियों की सोच छोड़,
बरसाती नदी का प्रकोप बढ़ता गया ॥

(३६)

गोरे तन वालों के हैं कारनामे काले-काले,
करते कपट हैं निराले बनते हुए ।
मेरे देश की ही सम्पदा को हथियाने चले,
तिमिर के सागर उजाले बनते हुए ।
लेकर प्रभावशाली संग देश द्रोहियों को,
विश्व में घिनौनी बेमिसाले बनते हुए ।
कारण निवारण न करते कदापि किन्तु,
कितनो हवाले के हवाले बनते हुए ।।

◆

(४०)

जिधर निगाह गयी उधर कराह उठी,
आँखों के समक्ष वही दृश्य घूमता रहा ।
रात दिन बीतता था कल्प कल्पना का वह,
विकल जवान वो, विकल्प ढूंढता रहा ।
जननि की दासता की मुक्ति के निमित्त वह,
फिरत फिरंगियों के ठाँव पूँछता रहा ।
सोते से अचानक दहाड़ उठता था वह,
गोलियों का स्वर कर्ण-वेध गूंजता रहा ।।

(४१)

जैसे-जैसे उमर जवान हो रही थी और,
वैसे-वैसे गति मति हो रही अधीर थी ।
चाल चलता था कुछ सोचता अकेला वह,
रुक-रुक सालती करेजे उर पीर थी ।
सुलग रही थी प्रतिशोध की अगिनि जोर
जोड़-जोड़ में समाई पुरवा समीर थी ।
भारत कृतारथ करेगा सव्यसाची बन,
मिटेगी कहाँ से वो तो अमिट लकीर थी ॥

◆

(४२)

क्रियाशीलता पे गर्व करता है देश सदा,
प्रतिकूल जिनकी न सोच रहती कभी ।
सैन्य शक्ति स्वावलम्बी एकता की पृष्ठभूमि,
आत्मबल की नहीं हुलास घटती कभी ।
निश्चय कठोर मृदुता में दृढ़ता को लिये,
विमुख बयार न कदापि बहती कभी,
राष्ट्र स्वाभिमान आन बान शान के निमित्त,
पीछे पग जाने में न चाह रहती कभी ॥

(४३)

नानक जी गुरुदेव, अंगद अमरदास,
ध्यान दिव्य ज्योति मनोयोग से जलाये थे ।
गुरु रामदास, अरजुनदेव के वचन,
हरगोविन्द, हरराय, शक्ति से उठाये थे ।
हरकिशन, गुरुतेग, पावन गोविन्द सिंह,
गुरुता की झूम-झूम धूम भी मचाये थे ।
सौम्य अति सिख धर्म, दस गुरुओं का ज्ञान,
ऊधम के मन कर्म वानी में समाये थे ।।

◆

(४४)

होती बलवान गयी तंत्रिका प्रखर और-
कर्मनिष्ठ होती गयी मान के बदन से ।
संप्रदाय, धर्म, एक साथ, एक हाथ बन,
रोष लगा फूटने था भवन-भवन से ।
बोती गयी बीज घृणा ऐसे अपराधियों में,
शांति चैन खोई हर देश के ललन से ।
मानस पटल पर अंकित अमिट छाप,
मिट सकती न किसी अमन दमन से ।।

(४५)

साहस आजादी के खयाल को न मेंट पाया,
पुण्य भूमि भारत पै दाल तो गली नहीं ।
घायल किये थे जिस्म सिर भी कुचल डाले,
चाल चापलूसों की कदापि भी चली नहीं ।
छात्रों को भी उसने सताया धमकाया किन्तु,
उनके मनोबलों की आस नकली नहीं ।
गोरों को सलाम करते नहीं जो राहगीर,
लाश जली, किन्तु अभिलाष तो जली नहीं ।।

◆

(४६)

लगा था परीक्षा की तैयारी में न जाने कौन,
उसका किसी को कुछ भी न अनुमान था ।
सफल निरीक्षक कृतित्व का सुयम वह,
इस हेतु उसका उसी का संविधान था ।
क्रांति पथ पकड़ा था छब्बीस दिसम्बर को,
अन्तरविवेकी बुद्धिमान ज्ञानवान था ।
आया था अठारासौ निनावे में वसुधा पै,
ऊधम सुनाम गांव वासी था किसान था ।।

(४७)

चिन्तन में लीन, क्या गुलाम जिन्दगी तबाह,
आँख भर आई उस नाहर जवान की।
बोला दांत पीस निज मन से विचारा खूब,
प्रतिफल दूंगा इस घोर अपमान की।
बीच दरबार में जा छलनी करूंगा देह,
खाकर कसम कहता हूं दिनमान की।
भूलेगा न कोई भी भयंकर कहानी यह
जागती रहेगी जोश-होश बलिदान की॥

◆

(४८)

दिन पखवारा माह बरस-बरस गये,
धीरे-धीरे बात भी पुरानी बनती गयी।
सरस रही थी हरियाली वीर बांकुरों में,
प्रतिदिन प्रबल-कहानी बनती गयी।
शांतिदूत क्रांतिदूत के प्रयाणगान सुन,
मस्ती मतवाली मस्तानी बनती गयी।
चेतन सजग मातृभूमि को बिकल मान,
सफल सुजानी महारानी बनती गयी॥

तृतीय सर्ग

अभियान पर्व

योग तपस्यामयी वसुधा अनुप्राणित है अभिभूत पुनीता ।
हैं बलशाली अनेक बड़े सतवादी, दयानिधि पावन गीता ।
राम, रहीम, गोविन्द, हरे, रसखान, महाव्रती सागर जीता ।
धर्म धुरन्धर ज्ञानी का जीवन, जीवन तो उपकार में बीता ।

(४६)

बाग गया मुट्ठी भर धूल को उठाया हाथ,

करके तिलक फूट-फूट कर रोया था ।

दी हैं कुरबानी यहां बाल वृद्ध युवकों ने,

उस दिन से कभी न नींद भर सोया था ।

प्रबल विरोध मान डायर को मारने की,

अन्तर मनों में दृढ़ शक्ति को संजोया था ।

सनक सयानी हुई बढ़ती कहानी गयी,

चिन्तन मनन् में दिवस-निशि खोया था ।।

◆

(५०)

लेकर एकाकी संकलप[१] पथ गोपनीय,

परम पवित्र भाव में निरत हो गया ।

गुणा भाग करता विचारता था ठौर-ठौर,

सारी राग छोड़ एक रागवत हो गया ।

जैसे-जैसे घटना घटी थी उस बाग बीच,

वैसा दृश्य खोजने में पूर्ण व्यस्त हो गया ।

व्यष्टि का प्रतीक जग जनमा अकेला किन्तु,

देशवासियों के मध्य का समस्त हो गया ।।

---

१. संकल्प

(५१)

लंदन में पढ़ने का लेकर बहाना दृढ़,
बंदाबस्त पाके अति बलवान हो गया ।
भेदन में लक्ष्य नर केसरी निरतमन,
विश्व में अनोखी एक रहस्य हो गया ।
लहर जगाथी देश भक्त उर मध्य फिर,
मुल्क की स्वतन्त्रता का भगवान हो गया ।
तप्त आततायियों से भारत निवासियों के,
बोझिल मनों की मंजु मुसकान हो गया ॥

◆

(५२)

दी हैं झकझोर घटनायें एक-एक कर,
उसके समस्त हृद तंत्रिका के तार को ।
पूरब पछांह देश उत्तर से दक्षिण में,
वीर बलिदानियों के सारे सरदार को ।
छोड़ा मोह प्राण का, प्रयाण गीत गाते-गाते,
भाव भूमि एक थी विशेष असवार को ।
गांव-गली करके उजाड़ भी पिछाड़े नहीं,
कूद पड़े खेल खेलने में आर-पार को ॥

(५३)

पीछे न कदापि था जलन्धर मैसूर बन्धु,
लाला हर कृष्ण को भी काला पानी दे दिया ।
छीनी जायदाद यातनाओं का चलाया दौर,
क्रान्तिकारियों के बीच ये निशानी दे दिया ।
पिन्जर में एक सौ पचास अनुरागियों को,
भूसा जैसा ठूंस-ठूंस नव कहानी दे दिया ।
बाँधकर साथ-साथ हिन्दू औ मुसलमान,
सरेशाम एकता की कुरबानी दे दिया ।।

◆

(५४)

देश अनुराग प्रतिशोध की प्रबल आग,
एक उर बीच दोनों में बड़ा तनाव था ।
चारो ओर छोर-छोर हो गयी थी जंग-जाल,
धर्म जाति-पांति में न किंचित दुराव था ।
जहाँ भी हो जेल, रेल झुण्ड में अकेल किन्तु,
एक दूसरे के मध्य प्रचुर लगाव था ।
क्रांतिकारियों की हर भाषा हर शैली एक,
उतना ही पीर और उतना ही घाव था ।।

(५५)

बात सुनता था प्रतिघात सुनता था नित्य,
भगत के कृत्य का बखान सुनने लगा ।
लगा मानने था प्रीति प्रेरक परन्तु वह
जीवन जगत का विधान गुनने लगा ।
सारी गतिविधियों पै ध्यान देता लुक-छिप,
क्रांतिकारियों का अभिमान बनने लगा ।
कौन ? कहां कहां ? किस हाल में पड़ा हुआ है,
प्रतिछन सुपथ विचार चलने लगा ।।

◆

(५६)

धीरे-धीरे बढ़ती प्रगाढ़ता गयी थी और,
ऊधम-भगत भावना से एक हो गये ।
बाग के दीवाने देश वाले परवाने सब,
साधकों की भाँति साधना से एक हो गये ।
प्राण-प्रण से लगे थे कार्य सिद्ध करने में,
सम्यक सदैव सामना से एक हो गये ।
प्रान्त सूबे और गांव-गांव से असंख्य किन्तु,
नाम से अनेक नामना से एक हो गये ।।

(५७)

उद्यम अनेक किया, जीविका चलाने हेतु,
पाने को कुशलता मुदित कामना लिये ।
मिला रौंदता है भय-त्रास का अहम बल,
सम्यक् मिला तो घनघोर सामना लिये ।
गया फांदता है कंटकों को संकटों को चीर,
व्याकुल विक्षिप्त सा विवेकी भावना लिये ।
खोज रहा ठाँव था विहान बीथियों के बीच,
सिद्धि पूजता था सिद्धिता की चाहना लिये ।।

◆

(५८)

वीर बलिदानियों का रोचक प्रयाण गीत,
मातृभूमि का पुनीत मंत्र बांचने लगा ।
बोझिल न होता था उछाह बढ़ता ही गया,
मुदित हिरन मन में कुलाचने लगा ।
लालच नहीं था किसी सम्पदा का लेशमात्र,
शक्तिदा से शक्ति भरपूर याचने लगा ।
लोहित आकाश सूर्य रश्मियों का तीव्र तेज,
मूक हो गयी दिशायें ध्यान नाचने लगा ।।

(५९)

माई दुखियारी एक आई बोली ऊधम से,
प्राणाधार मेरा बाग बीच कहीं खो गया ।
जोह कब से रही हूँ आसरा न आया लौट,
मेला में अकेला रेला-पेला बीच हो गया ।
कैसी पहचान ? डील-डौल कैसा रूप रंग,
कैसा मुख मंडल किधर से है वो गया ।
साफा अजमेरी बाँधे गोर मुख, चौड़ा बड़ा,
अड़ा मुझे यहाँ जाने कहाँ जा के सो गया ॥

◆

(६०)

पावन सरोवर में आये थे नहाने हम,
हिये में छिपाये थे मनोरथों की साध को ।
पान कर अमरित मान अन्त संकटों का,
पुण्य फल कामना भरी थी आधो-आध को ।
आये थे विशिष्ट इसथान टालने अनिष्ट
जान पाये किन्तु न अजाने अपराध को ।
होकर अकेली यहाँ भटक रही हूं वत्स !
लाँघना है बाकी भवसागर अगाध को ॥

(६१)

छीन तन हीन बल एक तो बुढ़ापा मेरा
दूसरे विरह की अगिन का प्रकोप है।
भड़क उठी अशांति तीसरे, हमारे देश,
चौथे उड़िजात होश देखि घटाटोप है।
मानै मन पांचवे न बन्धन प्रभाव कोई,
छठवे तो छोड़ै गोला धाँय-धाँय तोप है।
साहस का परिहास सातवें उड़ाते नीच,
अष्ट सिद्धि आठवें दुराती सप्त शोक है॥

◆

(६२)

सागर है आंसुओं का उसमें हिलोरे गम,
'रतन' थी डूबी उतराई घूम-घूम के।
आंचल भिगोती थी बेहाल बनि, धरती का,
पाई न सुराग अकुलाई घूम-घूम के।
पूछैं हाल-चाल सब हाथ न बढ़ावै कोई,
आप बीती सारी बतलाई घूम-घूम के।
दिखा सामने किशोर पास माई दौरि आई,
व्यथा जो वियोग की सुनाई घूम-घूम के॥

(६३)

फफक पड़ा किशोर बीच में ही बात काट,
कहा माई धीर धरू साहस न खोइये ।
तेरे ही समान है असंख्य दुखियारे यहां,
अनुकूल अवसरों के बाट घाट जोइये ।
ऊधम है नाम मेरा मैं भी हूँ अकेला जग
मेरा लो सहारा किन्तु और मत रोइये ।
लूंगा कर बूंद-बूंद खून का हिसाब तुम
वन्देमातरम् का सुमंत्र बीज बोइये ।।

◆

(६४)

आशा के सहारे रह लूंगी मेरे प्यारे लाल,
तुमको पुकारता है देश आर्त स्वर से ।
दुष्टों आततताइयों का मुंह फेर देने हेतु,
छोड़ चलो मोह माया त्याग अब घर से ।
मुझे भी मिलेगा तोष, शांति बलिदानियों को,
होगी अमरत्व गाथा तेरी भी समर से ।
किन्तु अपनाना सावधानियों को सावधान,
पांव फेरना कभी न पावनी डगर से ।।

(६५)

जागरण का सनेस लगा उर तीर जैसा,

आँखों में सुहाना सा प्रभात दिखने लगा।

लगन लगाया पूर्ण आस्था भर भारती में,

कही अनकही कथा ज्ञात करने लगा।

दिया था भरोसा उस माई के सुसाहस को,

मन में भूचाल दिनो-रात चलने लगा।

जहाँ भी मिलेगा प्रतिशोध वहां जायेगा ये,

बात-बात ऊधम अजात दिखने लगा ।।

◆

(६६)

आरत बचन और करुणा कराह सुनीं,

आह सुनी भूखों औ भिखारियों की दीनता।

पराधीनता की वृत्ति बढ़ती गयी थी घोर,

भ्रमित विवेक ज्ञानवानियों की हीनता।

देखा बड़े-बड़े शासकों में मित्रता विरोध,

कपट कुचाल बरतानियों की क्षीनता।

दिवस था मौन अभिमान स्वाभिमान किन्तु,

निष्ठावान देखी क्रांतिकारियों की लीनता ।।

चतुर्थ सर्ग

प्रयाण पर्व

हो जब उद्यत आगे चले, चलते-चलते-चलते ही गये हैं ।
पावन पाठ पढ़ा जबसे, पढ़ते-पढ़ते-पढ़ते ही गये हैं ।
क्रान्ति विभाव गढ़ा मनमें, गढ़ते-गढ़ते-गढ़ते ही गये हैं ।
भाग गया अधमी पुरते, पुरते-पुरते-पुरते ही गये हैं ।

(६७)

किसी को बताया नहीं प्रण भी जताया नहीं,
गिरवी किया है वो निजत्व आन-बान के ।
बाधक बनेगी बात, बात फैल जाने पर
घर कर लेगी अपनत्व कान-कान के ।
मनन् एकाकी करता था वह बिन्दु-बिन्दु,
मुँह से निकालता था तत्व छान-छान के ।
डायर गया है अमरीका यह जानकर,
चला प्रतिशोधक सुरत्व ठान-ठान के ।।

◆

(६८)

आया अमरीका मिला वहां के गदरियों से,
हिल-मिल कार्य का माहौल जानने लगा ।
जानी पहचानी रीति-नीति एक-एक कर,
गोरा और काला का विभेद जांचने लगा ।
किन्तु सबको बताया पढ़ने को आया यहां,
पीड़ा मातृभूमि की हिये में झांकने लगा ।
कोई भी असलहा न हाथ में था ऊधम के,
प्यारा अरमान मानो धूल फांकने लगा ।।

(६६)

हथियाया अस्त्र शस्त्र करके प्रयत्न बन्धु,
धीरे-धीरे सपनों को अपना बना लिया ।
पाकर सनेस द्रुत मौत भाई भगत का,
भारत को वापसी की कल्पना बना लिया ।
पाहुन पुलिस के बने थे अमरितसर,
चार वर्ष की सजा को अर्चना बना लिया ।
पाकर रिहाई कुछ दिवस सुनाम बसे,
जीवन का लक्ष्य पूर्ण सर्जना बना लिया ।।

◆

(७०)

खेत वन बाग गांव के विचित्र रागन में,
ज्यादा दिन रुकना यथेष्ठ समझा नहीं ।
उमड़-घुमड़ बादलों की ललकार सुन,
फागुनी बहार कोई, जेष्ठ समझा नहीं ।
खेती-बारी करना बसाना घर-बार फिर,
निज कर्तव्य से भी श्रेष्ठ समझा नहीं ।
साथी विसवासी अनुकूल बलिदानी वीर,
भगत सरीखा भी सचेष्ट समझा नहीं ।।

(७१)

झील झरनों की सुख सम्पदा विलोकते ही
मनका कुतूहल कलोल करने लगा ।
नहीं हारते हैं जीव जन्तु बनवासी वहां,
तन का कुतूहल अमोल बढ़ने लगा ।
धरा-धाम पर प्राण वारते सदैव शूर,
पन का कुतूहल भूगोल पढ़ने लगा ।
भ्रान्तियाँ पलायन की ओर उन्मुख हुई,
जन का कुतुहल आकाश चढ़ने लगा ।।

◆

(७२)

काश्मीर आ गया था घर से निकल किन्तु
मन भी लगा न वहां धुन और-और थी ।
भगत की वीरगति से बना एकाकी वह,
उनके सहारे की तो बात और-और थी ।
व्याकुल हताश ऐसा बना बना घूमता था,
भारती के लाड़ले की बात और-और थी ।
ज्ञानी साहसी समाजवादी वीर धीर बड़े,
क्रांतिकारियों की जात-पात और-और थी ।।

(७३)

मोटर मैकेनिक कुशल स्वांग धारक में,
देश अनुराग स्वर गान गूंजता रहा ।
लेकर भगत सिंह का सजीव चित्र साथ,
बिस्मिली ग़ज़लों को गाते घूमता रहा ।
निपुण बहुत बने बढ़ई के काम में भी,
ध्येय पूर्ति के लिए विभाव ढूंढ़ता रहा ।
इंगलिश पढ़ना और बोलना प्रवाहयुक्त,
भारती का किन्तु पूज्यपाद पूजता रहा ।।

◆

(७४)

कक्षा के समस्त साथियों का था दुलारा वह,
दरजा मिला था इस भारती के लाल को ।
आत्मबलवान तन मनसे विराट अति,
स्वयं में समेटे रहा सारे इन्द्रजाल को ।
परम-प्रवीन पढ़ने में धीरवान वीर,
डरता नहीं था किसी काल महाकाल को ।
मीठी तर्कयुक्त बात बोलता था बूझ-बूझ,
फूट पड़ता था देख पीड़ित बेहाल को ।।

(७५)

ठीक इक्कइस बरसों के बाद घटना के,
बन्देमातरम् की किताब पढ़ने चला।
सैंतीस बरस का जवान शक्तिमान बन,
हिमगिरि श्रृंग पे बेबाक चढ़ने चला।
किन्तु, आततताइयों के मन फूले-फूले रहे,
आज वह उनका रूआब हरने चला।
माइकल डायर की डायरी के एक-एक
पृष्ठ का समूल भी हिसाब करने चला॥

◆

(७६)

इंग्लैण्ड पहुंच गया वो सन सैंतीस में,
लीन हो गया था अभियन्ता की पढ़ाई में।
अंकुर उगा था धीरे-धीरे, बन वृक्ष गया,
योजना को रूप दिया युद्ध की चढ़ाई में।
जनरल मुख्य अभियुक्त मर गया स्वयं,
सर माइकेल आ गया था मनुसाई में।
हाथ लगा सिक्सबोर का रिवालवर जब,
प्रथम सोपान समझा था सिद्धियाई में॥

(७७)

माइकल डायर दिवंगत हुआ है जान,
आतमा बेचारी उसको कचोटने लगी ।
चला हाथ से गया शिकारी का शिकार जब,
आसथा पुजारी उसको बकोटने लगी ।
कटी बेड़ियाँ न मातृभूमि की सहजता से,
दासता उधारी खिसियानी लोटने लगी ।
आशा की प्रबल राग घात दे निराशा को जो,
वन्देमातरम् जीम फिर ओटने लगी ।।

◆

(७८)

माइकल को न मार पाया हाय, जीवन में,
इतनी कहानी तो विसूरी रह जायेगी ।
हंउसला संजोये अर्मानों की कड़ी में एक,
अरमान की ये मजबूरी रह जायेगी ।
नापकर दूरियां ठिकाने आ गया था किन्तु
भाव और कर्म में ये दूरी रह जायेगी ।
डायर को डायरी सिखाने को चला था किन्तु
यज्ञ की ये आरती अधूरी रह जायेगी ।।

(७९)

पानी नदियों का अन्न खाया है धरा का जिस,
पादपों से पाया फल-फूल भरपूर के।
कानन पहाड़ों छवों रितुओं का पूर्ण प्यार,
पुरखों से पायी पहचान भरपूर के।
गाँव गलियारों खलिहानों से कुटुम्ब बल,
साधकों से सीखी साधनायें भरपूर के।
वीरों जैसी वीरता औ चांद से सुरम्यता ले,
कर्ण प्रिय सुनी थी प्रभाती भरपूर के॥

◆

(८०)

आई घटा घिर असमंजस की घेरि-घेरि,
बीच-बीच चपला चमकि जाती मन में।
सिहर-सिहर चले विविध बयार जैसे,
आई अकुलाई ज्यों समाई जाती तन में।
इधर उधर हर्ष-शोक की अटेरन पै,
थमकि थमकि उमगाई आती छन में।
बरस पड़े हैं मेह अश्रु से नहाया ज़ब,
उमगि-उमगि अलसाई जाती वन में॥

(८१)

थिरक उठे थे पांव सूझी कारगर युक्ति,

एक बार फिर से जवानी हँसने लगी ।

फड़क उठी भुजायें हौंसला सजीव बन,

क्रांतिकारियों की उनमानी बसने लगी ।

देने वाला हुक्म राज्यपाल है विराजमान,

हीन भावना की मसतानी नसने लगी ।

मुखर हुई है अभिलाषा शक्तिशाली बन

रोम-रोम सुयश सुहानी लसने लगी ।।

◆

(८२)

लंदन के वासियों में घुल-मिल गये खूब,

तैंतिस के आस पास की कहानी देखिये ।

सइफर्ड बुश गुरुद्वारा का प्रवासी बना

जबर जवान की जवानी यहां देखिये ।

मिल भारतीयों से सुनाते थे प्रयाण गीत,

उतकर्ष भाव की यहां रवानी देखिये ।

शिवसिंह जोहल को अपना सुहृद मान,

हिन्द की यहां पै अब हिन्दुवानी देखिये ।।

(८३)

भारत के लोग रहते थे गुरुद्वारा बीच,
छात्र भी प्रवास वहां पाया था पहुंच के।
परिचित हुआ एक-एक से विशेषकर,
दिलदार साथी भी न पाया था पहुंच के।
जनों को रिझाता करता विनोद साथ-साथ,
कामना यथेष्ट भी न पाया था पहुंच के।
मीत एक मिला किन्तु उससे बताया नहीं,
बात निज मन की जताया था पहुंच के॥

◆

(८४)

काली घटा छाई मन्द-मन्द हो फुहार कभी,
पवन झकोरा विषमय कर दे कभी।
आलस न आये पास नींदहू सताये नहीं,
निष्प्राण जीवन सजीव कर दे कभी।
शीत सहलाये तन-मन को कँपाये किन्तु,
रग-रग परम प्रवीन कर दे कभी।
प्राण से पियारा होता उद्यमी को कर्म अति,
तमस को एक-दुई-तीन कर दे कभी॥

(८५)

सत्याग्रहियों पे क्रूरता से डायरी प्रवृत्ति,
वाली घटना से पोर-पोर फटने लगा ।
कायर के जीवन का अन्त करने के हेतु
एक-एक दिन तीव्रता से घटने लगा ।
शेर-दिल ऊधम ने ऊधम मचाया जब,
एक शॉट ने ही वह धूल चटने लगा ।
डायर के डायरी की, बदला लिया था जब,
सारा देश ऊधम का नाम रटने लगा ।।

पंचम सर्ग

साधना पर्व

आलसता जिनके तन से गयी दूर कहां कोई देश कहां है।
पूर करै निज कार्य अपूरन सम्यक ताके नरेश कहां है।
पावनता करते हैं कृतारथ दैन्यता का परिवेश कहां है।
जीवन का अभिप्राय जो जाने उन्हें अभिज्ञानम् शेष कहां है।

(८६)

रत रहा साधना में साधक की भांति वह,
आंधियों से जूझने की शक्ति पूजने लगा ।
रातों की भयानक विचित्र राग-रागिनी में,
सघन तिमिर से प्रकाश सूझने लगा ।
यही कामना थी उसी दृश्य में मिटाया जाये,
मौका अनुकूल भी विचार ढूंढ़ने लगा ।
नहीं भूलता था कभी विगत कहानियाँ वो,
बाग की विभीषिका का स्वर गूंजने लगा ।।

◆

(८७)

आते असमंजस के क्षण, क्षर जाते तब,
बल मिलता था उसे सुगम सुगीत से ।
कल्पना साकार करने की योजना में लीन,
उत्साह युक्त चला, लड़ने कुरीत से ।
लार्ड जेट लैण्ड और डायर की खोज उसे,
अपने को जोड़े रहा मूल से अतीत से ।
ऐसी कुछ मंत्रणा के बीच, करना उसे है,
खीझ थी भयानक, बताया उस मीत से ।।

(८८)

आफिस में इंडिया के एक सूचना को देख,
पढ़ने लगा था क्षण-क्षण के प्रभाव को ।
होने वाली सभा में मिलेंगे खल एक साथ,
पाया था भरोसा बल पुलिकत चाव को ।
भाषण करेंगे वहां, परसी सैकीन सर
मिली थी उमंग रोम-रोम रसश्राव को ।
आया था सुयोग, चला, बढ़ा गैंगवें के हाल,
मुसकाया मन्द-मन्द लखके जमाव को ।।

◆

(८६)

रासो-ऐसो ईष्ट इंडिया की मिली-जुली सभा,
तेरा[१] अपरैल को नियत तिथि ज्ञात है ।
लंदन का बहुत प्रसिद्ध कैक्सटन हाल,
आज होगा डायर का अंतिम प्रभात है ।
माटी को नमन, मातृभूमि को प्रणाम कर,
लंदन भी देख लेगा भारती प्रपात है ।
सभा के प्रहरियों में घोषणा करूंगा आज,
झेल शठ ! ऊधम का घोर वज्रघात है ।।

---

१. तेरह

(६०)

सायंकाल तीन बजे शुरू हो गयी थी सभा,
टिउडररूम में विचार गूंजने लगा ।
लार्ड जेटलैण्ड, सर माइकेल डायर औ,
पर्सी सेकरीज का प्रहार टूटने लगा ।
सम्यक लुइस डान बैठे पंक्तिबद्ध हुए,
और भी लेमिंग्टन सम्हार ऊंघने लगा ।
जैसे-जैसे बढ़ती [illegible] [illegible] कार्यवाही वैसे,
ऊधम [illegible] [illegible] पांव मन घूमने लगा ।।

◆

(६१)

पावन था ध्येय गुरु भगत का नित्य गान,
बन्देमातरम् मूल मंत्र जपना रहा ।
ताना-बाना बुनता रहा था कल्पना के बीच,
प्रतिशोध लेने का अजीब सपना रहा ।
किन्तु बार-बार अस्त्र पर हाथ फेरता था,
घुला-मिला ऐसा जैसा उन्हीं का बना रहा ।
पंक्तिबद्ध बैठे मिले पांचों सामने की सीट,
ऊधम का होशजोश सौ गुना तना रहा ।।

(६२)

उधर विचारों में निमग्न अधिकारीगण,
इधर विचार पै विचार चलता रहा ।
सम्यक समस्या का, निदान खोजते उधर,
इधर प्रहार पै प्रहार चलता रहा ।
तर्क एक दूसरे के काटते उधर गोरे,
इधर भी तन पे गुबार चढ़ता रहा ।
उधर सभा समाप्त होने जा रही थी और,
इधर भी मन का बुखार बढ़ता रहा ।।

◆

(६३)

शीघ्र मुड़ आया गैंगवे में वह हर्षयुक्त,
मानो वह सभा से निकल जाना चाहता ।
कोई हरकत विपरीत ऐसी किया नहीं,
लगता था उसके निकट जाना चाहता ।
किसी भी अनिष्ट की आशंका का सवाल नहीं,
निडर प्रवर वीर पास जाना चाहता ।
बोला धन्यवाद चोला डायर का चीरा जब,
पाया परिणाम श्रेष्ठ जो कि पाना चाहता ।।

(६४)

अति सन्निकट मात्र दूरियाँ थीं सांस-सांस,
गोली लगने से गिर डायर गया वहाँ ।
लार्डजैट लैण्ड दम तोड़ गिरा धरती पै,
दृष्टि खोजती थी शेष कायर गये कहां ।
घायल किया था अन्य तीन अधिकारियों को,
खेल खिलवाड़ का था रेफरी बना यहाँ ।
पार किया सारी कठिनाइयों को झेल-झेल,
डायर के जीवन बायर गया तहाँ ।।

◆

(६५)

उठा ऐसा बढ़ा किसी को न कुछ भान हुआ,
मात्र षट इंच दूरी से चला दी गोलियां ।
शांत हल-चल क्षण बढ़ी, हल-चल फिर,
माथे पर देश भक्त ने लगा ली रोलियां ।
डायर तुरन्त धराशायी हो गया था नीच,
सारे सभासदों की भी बन्द हुई बोलियां ।
ऊधम के कृत्य की प्रशंसा हुई भारत में,
हुई अभिभूत क्रांतिकारियों की टोलियां ।।

(६६)

डायर को मारने की योजना में लीन वह,
मन में सुदृढ़ आन-बानी ठान-ठान ली।
वही तेरा अपरैल उनइस वाला दिन,
सहसों निहत्यों बीच लोड गन तान ली।
बैन सुनता रहा था चित्र बसा बीच नैन,
ज्वाला प्रतिशोध की कसम कर मान ली।
पाई बीत तेरा अपरैल सन चालिस न,
सबल सभा में कूद, डायर की जान ली॥

◆

(६७)

बोला अट्टहास कर सिंह का सपूत, शठ,
पीर आज छाती की हमारी शीतला हुई।
तपन थी जेठ की दुपहरी की तप्त धूप,
सावन की धरती ज्यों शस्य श्यामला हुई।
जागृत रही थी मेरी अस्मिता परन्तु अब,
दृढ़ता सयानी बन आज अचला हुई।
दिवस गुजरते रहे थे साधना के किन्तु,
ऊधम की ऊर्ध्वमुखी साध सफला हुई॥

(६८)

बोझ लगती थी जिन्दगी की उपलब्धियाँ भी,
आता जब दिवस शहीदी यादगार में ।
वेग बल रोकने का साहस अधीर बन,
परिणाम चाहता था शीघ्र आर-पार में ।
मूक रह पाती न शरीर की धमनियाँ भीं,
वन्देमातरम ध्वनि होती तार-तार में ।
धाया जब गांव का गंवार पारावार बन,
धूल चटवाया उसे एक ही प्रहार में ।।

◆

(६६)

डायर के सीने वाली दाईं पीठ छेद डाला,
भारत के वीर बांकुरा, का ये कमाल था ।
भीड़ भरे सजग प्रहरियों के होते हुए,
लक्ष्य भेदना भी एक, अहम् सवाल था ।
सालों-साल सालता रहा था हर साल दिन,
तेरा अपरैल आज ऊधम का जाल था ।
विकट बवाल हाल में मचाया ऐसा वह,
शक्तिपुंज भरपूर बना महाकाल था ।।

(१००)

बबर है सिंह, खर, समझ न लेना खल,
हहर-हहर नद गहर अथाह है ।
माझी है स्वयं पतवार ऐतवार कर,
बट है विशाल घन शीतलाई छांह है ।
आकुल है ध्येय मेरी व्याकुल बसुन्धरा है,
हो चली जवान परिपक्क भरि चाह है ।
भीषण प्रवाह राह की न परवाह अरि,
देखले तू देखले, ये ऊधम की बाँह है ॥

◆

(१०१)

तेरा न पहाड़ा ठीक, पढ़ ले पहाड़ा मेरा,
मेरे ही अखाड़े में तू वीर बनने चला ।
मैंने है पछाड़ा, बड़े बड़ों को लताड़ा खूब,
छोड़ देश भाग जा, नगाड़ा बजने चला ।
जानी पहचानी गयी बड़बोलियों की बोल,
भाड़ में तुम्हारा अब, भाड़ा फटने चला ।
ले, कर बखेड़ा कुछ दिवस यहाँ पै, खल,
सिंह की दहाड़ का दहाड़ा बढ़ने चला ॥

(१०२)

मारा मैंने पापी औ कसाई इस डायर को,

चलवाई जिसने निहत्थों पर गोलियां ।

गाने के सुखद पल, झूम-झूम नाचने का,

इसने पुलिस की जुटाई वहाँ टोलियां ।

मैंने भी निहत्थे पर, इसने निहत्थों पर,

किया है प्रहार चूर-चूर की ठिठोलियां ।

सुनो, हे ! सभासदो सभा में रक्तपात किया,

इसकी सभा के बीच, बन्द किया बोलियां ।।

◆

(१०३)

भारत में आते गोरे, पाते हैं इनाम बड़ा,

सारा तामझाम धूल चाट, मिट जायेगा ।

मेरे देश में है झूठ-मूठ लोकतंत्र तेरा,

मरदानगी का भावतत्व मिट जायेगा ।

बाल नर नारियों को भूना है निठुर बन,

झण्डे का तुम्हारा झारझन्ट बिक जायेगा ।

ऊधम अकेला नहीं जन-जन ऊधम है,

डायरी का पूरा अभिमान लुट जायेगा ।।

(१०४)

हुआ था मदान्ध बल शासन का साथ लिये,
वाह-वाही पाने को, तबाह करता गया।
मान करके गुलाम इसने खिलाया गुल,
नशे पर नशे का प्रवाह बढ़ता गया।
भागा, मोह भ्रम, जागा अस्मिता पै प्रश्न चिन्ह ?
भारती का हर नर नाह चढ़ता गया।
क्रान्तिकारियों के मंत्र देश अनुरागियों के,
दिलो व दिमाग में उछाह भरता गया॥

◆

(१०५)

मेरा है विरोध शासकों से, न कि जनता से,
उनका अनिष्ट तो कदापि न करूँगा मैं।
डायर की भाँति अंधा बनके, जिऊँगा नहीं,
भोली-भाली प्रजा का न हिंसक बनूँगा मैं।
सभ्यता हमारी सर्वश्रेष्ठ जग जानता है।
धर्मशास्त्र पथ, से विमुख न चलूँगा मैं।
सिख सरदार हूँ, असरदार, दमदार,
अरियों की छाती चढ़ मूंग भी दरूँगा मैं॥

(१०६)

ऊधम अकेला ही धकेला अलबेला गढ़,
सभा के अगेला औ पछेला देखते रहे ।
हुआ है झमेला झट-पट रेला-पेला ठेल,
मन से तनाव तन-मन झेलते रहे ।
खाकर चपेट, लेट, बाजुओं के बल खल,
पेट दाब एक दूसरे को ठेलते रहे ।
भागे उस ओर जिस ओर भी मिला सुकून,
जबर दबंग जोर जंग़ खेलते रहे ।।

◆

(१०७)

बाद घटना के कहा अपने बयान में था,
घृणा-द्वेष बस किया कृत्य शानदार है ।
आलम था, खुशियों का बाग में लगा था मेला,
हाल में लगा है मेला वैसा दरबार है ।
वही है दिनांक, वही माह, वही घड़ी आज,
भारत की वहां, यहां लंदन बाजार है ।
वहां था पधारा शस्त्र सैनिकों को साथ लिये,
यहां पै अकेला एक, आया सरदार है ।।

(१०८)

बाधक बनेगा जो भी देश की स्वतन्त्रता में,
उसके सशक्त बन्धनों को काट दूंगा मैं।
आलस नहीं है बलिदानियों में लेशमात्र,
भारत का खोया सारा राज-पाट दूंगा मैं।
काकस की चालबाजियों को, मातहत कर,
अघट घटों को भी सुहाना घाट दूंगा मैं।
माल करते जो चट, हड्डियों को काट-काट,
गिद्धों की जमात में सहर्ष बांट दूंगा मैं॥

◆

(१०९)

दहल गये थे अंगरेज दिल, देख रोष,
कायरों के दिल, धक-धक करने लगे।
गोरे-गोरे मुंह स्याह हो गये सिपाहियों के,
आपस में मिल चक-चक करने लगे।
दौड़े संतरी अनेक, ऊधम की ओर, किन्तु
माथे पे पसीना लक-लक करने लगे।
आया भागने न, आज दागने को आया, जब,
सीखचों में पाया झक-झक करने लगे॥

(११०)

किया न प्रयास लेशमात्र भी बचाव हेतु,
नर केसरी निशंक सामने खड़ा रहा ।
विलियम राबर्ट ड्यूटी पर थे विशेष,
छीन ली रिवाल्वर किन्तु वो अड़ा रहा ।
मैक विलियम सारजेन्ट को प्रदान किया,
मातृभूमि के ही ध्यान, ऊधम पड़ा रहा ।
जाकेट की किया पड़ताल पाकिटों की जांच,
किन्तु जोश वीर बांकुरा का तगड़ा रहा ।।

◆

(१११)

कैक्सटन हाल की खबर फैलती ही गयी,
जैसे आग फैलती हो पाकर बयार को ।
होता अश्व सजग पकड़ने को वेग बल,
बलशाली पीठ पर पाकर सवार को ।
शाखा प्रतिशाखा बढ़ी जाती बात बातन की,
बनती बतंगड़ है पाकर लबार को ।
पांव उतसुकता ने अपना पसारा ऐसा,
छूटा था पसीना उस, पाकर गँवार को ।।

(११२)

ऊधम कहां है भाई ऊधम कहां है भाई,

देखने को भीड़ का अदम्य हौसला रहा ।

कोई कहता था ये तो, गजब बहादुर है,

कोई शूरवीर देख-देख बौखला रहा ।

कोई मुख मंडल की आभा से चकित अति,

कोई साहसी की परिभाषा तौलता रहा ।

तनिक न भयभीत चेहरा, प्रफुल्ल मन,

मुक्ति मात्र के लिए ही खून खौलता रहा ॥

षष्ठ सर्ग

अनुशीलन पर्व

साहस का अनुशीलन शक्ति का योग सदा करता रहता है।
ज्ञान सुभक्ति लिये नित नूतन तीव्रता से बढ़ता रहता है।
भेद मिटा घर के बनके में निरंतर ही लड़ता रहता है।
मानस में जन के नर श्रेष्ठ वो ऊँचे सदा चढ़ता रहता है।

(११३)

लाल मातृ भूमि जो कि अस्मिता बचाने हेतु,
पहुंचा वहाँ पै धूल फांकता कहां-कहां ।
छाती वज्र की है, थाती देश अनुरागियों की,
गायेगा जमाना, कीर्ति छायेगा जहां-जहां ।
होगा सरनाम क्रान्तिकारियों में एक और,
गर्व से कहेगा मंत्र बांचता अहा-अहा ।
डायर ओ डायरी का पृष्ठ टूक-टूक किया,
अट्टहास हंसी हंसा हंसता हहा-हहा ॥

◆

(११४)

जोखिम में जान-जान डायर की भारत में,
लंदन को भाग, निज पातक बचा लिया ।
गांव-गांव गलियों से रोष सड़कों पे आया,
सैकड़ों जनों का, वह घातक बचा लिया ।
कार्यवाही होगी, कटु निन्दा घटना की कर,
संकट घड़ी का, उपजातक बचा लिया ।
माना अधिकारियों ने घृणित जघन्य पाप,
किन्तु घनघोर घन चातक बचा लिया ॥

(११५)

हंटर कमेटी का गठन किया जांच हेतु,
रोष को दबाने का ये उत्तम सुझाव था।
उन्हें ही बनाया था कमेटी का सदस्य चुन,
जिन दोगलों का नहीं किंचित प्रभाव था।
सुख सुविधा तुरन्त और भी प्रदान किया,
उच्च पद देने हेतु अगला लुभाव था।
चंद जयचन्दों की समझ में न आया मर्म,
कोरे-कोरे वचनों में कोरा ही झुकाव था।।

◆

(११६)

भारत का रक्तबीज सामने तुम्हारे खड़ा,
एक से अनेक रक्तबीज बन जायेंगे।
जूतन की ठोकरों से मार मार कूकरों को,
उनपै कराल काल घन घहरायेंगे।
भागते बनेगा नहीं, जागते बनेगा नहीं,
गोरे-गोरे लाल गाल सूखे मुरझायेंगे।
छायेंगे तूफान बन ब्रिटिश हुकूमत पै,
मेरे देश से तुम्हारे दीप बुझ जायेंगे।।

(११७)

हंटर कमेटी के समक्ष उस डायर ने,
भारती गुलामों की कथा बखानने लगा।
निज मुख मानने लगा था शूरबीर वह,
सरग बितान शठ खूब तानने लगा।
विवश हुआ मैगजीन में न गोली शेष,
नशे की खुमारी दो-गला उतारने लगा।
तोड़ते समय दम चीखती गुलामी 'सर'
सेखी सर-सर करके बघारने लगा।।

◆

(११८)

मानिये गुलाम धन बल से विहीन सर,
बात से ही बात-बात को पछारने लगा।
प्रतिघात वाली घात योजना बनाता क्रूर,
रात-रात जाग रागिनी संवारने लगा।
भारत में आना चाहता था एक बार फिर,
वीर बलिदानी छवि को नकारने लगा।
इंग्लैण्ड की विशेष बैठक में डायर वो,
अपने प्रभावी पक्ष को उभारने लगा।।

(११९)

अमन-चयन और शांति को बनाने हेतु,
मेरे साथ गये थे सिपाही सज-धज के।
क्रुद्ध हो गयी थी भीड़ देखके पुलिस बल,
उलटे थे मेरी ओर गरज-गरज के।
गोलियां चलानी पड़ीं अपने बचाव हेतु,
मरे कुछ लोग इस कारण महज के।
साथ भी थे अस्त्र शस्त्र कुछ बागियों के पास,
निष्ठावान रहे हम अपने फरज के॥

◆

(१२०)

डायर न जायेगा कभी भी लौट भारत को,
ऐसा फैसला दिया कमेटी ने विचार के।
आयी गयी बात दफनाया नाटकीयता से,
क्रान्तिमन जाना चाहे पास उजियार के।
इधर चलाया केस ऊधम पे कातिलाना,
वीर चले चीरने को पेट अँधियार के।
मुदित हुए थे हिन्दवासियों के मन अब,
क्रान्तिवीर आये जब गाँव मिनसार के॥

(१२१)

ग्राम व्यवसाय और नाम पूछने पे कहा,
भारत का निष्ठावान शुद्ध देशवासी हूं।
किसी भी सोसायटी गिरोह का सदस्य नहीं,
मातृभूमि के लिए विशुद्ध मंजुभाषी हूं।
वृद्ध होके प्राण त्यागने से सरोकार नहीं,
देश की स्वतन्त्रता का पूर्ण अभिलाषी हूं।
हिन्दू हूँ मुसलमान सिख भी इसाई किन्तु,
रामकृष्ण की धरा का पूत अविनाशी हूं।।

◆

(१२२)

मिले प्रेम से जो पाक साफ मन सानुराग
उनके लिए उदार राग बन जाता हूं।
वक्र दृष्टि देखके उभरता है स्वाभिमान,
राख कर देने हेतु आग बन जाता हूं।
जो भी परिणाम मिले उसके लिए तैयार,
अस्मिता कुरेदने पै नाग बन जाता हूं।
द्वेष भाव अहम मिटाके मिलता है यदि,
तीर्थराज पावन प्रयाग बन जाता हूं।।

(१२३)

ठेकेदार सभ्यता का रक्त का पियासा वह
शिष्ट बनता है कर्म करता घिनौना है ।
तड़प तड़प पूरी शक्ति भर कहता हूं,
निपट साम्राज्यवाद भोड़ा और बौना है ।
उमड़ घुमड़ आर पार सप्त सागर के,
डायर को मारा यह सुखद बतौना है ।
किया हमने है जोश-होश में सुकर्म यह,
लेशमात्र इसमें न औना है, न पौना है ।।

◆

(१२४)

पूरी तौर से तैयार आया निज कार्य हेतु,
साहस है ऊधम का, लाया नहीं घूस से ।
जाकेट की दांई टाउजर की भी दायीं जेब,
खोज-खोज करके निकाले कारतूस थे ।
ढाई गुना[1] दशक की गोलियां बरामदी में,
धारदार चाकू हाथ आयी मनहूस के ।
पाया शस्त्रज्ञानियों ने दोष मुक्त गन किन्तु,
चैम्बर में कारतूस डाला नहीं ठूंस के ।।

---

१. २५ कारतूस

(१२५)

चाकू रख, जज के समक्ष शस्त्र गोलियों को,
किया था प्रमाणित लगाये अभियोग को।
स्वीकारने को सच इंगित किया है वह,
ऊधम बताओ ! इजलास को भी लोग को।
खाली खोखे चार देख चीख उठा वीर वह
छांगुर[1] दिखाया त्याग हाथों के संयोग को।
तिल का बनाती ताड़ पुलिस तुम्हारी रहे,
रंचमात्र क्लेश नहीं नाहर निरोग को ।।

◆

(१२६)

पूछा सारजेन्ट से कहाँ है ? जेटलैण्ड वह,
मर गया, उसको तो मर जाना चाहिए।
गोली मेरे पास अवशेष उसके लिए भी,
इनको भी सीने से उतर जाना चाहिए,
बाईं ओर पेट का इशारा कर बोला वीर,
डायर हरामी सा भहर जाना चाहिए।
मुझे, मेरे भारत को इसके लिए घृणा थी,
पापियों का यों ही प्राण हर जाना चाहिए ।।

---

१. ६ अंगुली

(१२७)

नहीं चाहता था निरदोष[1] को फंसाया जाय,
इसीलिए अपने को दोषी कहने लगा ।
कटुक वचन लगा बोलने रिचर्ड खल,
व्यर्थ के विवाद का सवाल जड़ने लगा ।
ऊधम ने कहा छोड़िये ये जांच-वाँच काज,
खेल-खेल है विचार वार सहने लगा ।
चार गज दूरी पर शून्य हो पड़ा था दुष्ट,
मुसकाया बार-बार घूर देखने लगा ॥

◆

(१२८)

घोर असंतोष वहाँ नारे विपरीत लगे,
कल्प-कल्प मापदण्ड एक क्षन[2] के रहे ।
कैसी उदासीनता पुलिस ने दिखाई यहां,
निधरक बरतानी कैसे तन के रहे ।
भारत के क्रान्तिकारी सुना था मायावी बड़े,
ऐसी बात बाल वृद्ध युवा जन के रहे ।
चारों ओर थू-थू थी प्रशासन की जोरदार,
सारे अधिकारी बौखलाये सनके रहे ॥

१. निर्दोष, २. क्षण

(१२९)

कैक्सटन हाल की खबर को वहां के पत्र,
अत्याचार नाम दे बहुत ही उछाला था ।
भारत के समाचार पत्र उस घटना को,
सामने परोसा सत्य-सत्य जो हवाला था ।
किसी ने लिखा था वीरता से पूर्ण कार्य यह,
दे के भिन्न भावभूमि किसी ने सम्हाला था ।
निरदयता से पूर्ण घृणित प्रशासन को,
कटु शब्द धार छातियों को बेध डाला था ।।

◆

(१३०)

आम सभा बीच बतलाया जनता को गया,
भारत निवासियों का घटना में हाथ है ।
कहा तो नहीं है किन्तु होता है प्रतीत यह,
किसी न किसी गिरोहबन्द से सनाथ है ।
जायेगा रहस्य खुल खोइये न आपा अब,
फुल्ल युवा चेहरा है सिकन न माथ है ।
ऊधम बताया नाम अपना निडर होके,
कहता अकेला और कोई भी न साथ है ।

(१३१)

वैसे तो शरीफ पढ़ा-लिखा है बातूनी बड़ा,
घायलों से माफी मांग वेदना जताई है ।
धोखे से लगी है गोली बार-बार बोला, और,
मानवीयता की अवहेलना बताई है ।
और किसी से न कोई उसको शिकायत थी,
डायर को मारने में चेतना लगाई है ।
निपट स्वदेश का पुजारी साहसी विचित्र,
मन में आजादी की विवेचना समाई है ।

◆

(१३२)

आगे बतलाया था प्रधानमंत्री भाषण में,
अपराधी जो भी है कठोर दण्ड पायेगा ।
ब्रिक्सटन जेल की विशिष्ट मेहमानियों में,
देखना है कितना वो वीरगान गायेगा ।
सरेशाम भूना है हमारे अधिकारियों को,
देखना भविष्य में बहुत पछतायेगा ।
प्राण रक्षा हेतु याचना करेगा बार-बार,
कांप-कांप काल कोठरी में मर जायेगा ।।

(१३३)

देने को बयान इकबालिया बुलाया गया,
जॉन स्वेन लेखक की लेखनी बता रही ।
बात कमरे की कमरे में ही रहेगी कैद,
फैसला तुम्हारा न्यायप्रियता जता रही ।
नहीं राजनीति मंच मैन ये अदालत है,
खरी खोटी बात खूब उसको सता रही ।
चाहत थी मनकी अनेकानेक मारने को,
एक को ही मार सका इतनी खता रही ।।

◆

(१३४)

नागफनी उपजाते न्याय के बहाने रहे,
भारतीयता का अब कान न उमेठिये ।
राजनयिकों के चाटुकार हो, तुम्हारा ढोंग
धर्म पे अधर्म का न चादर लपेटिये ।
अभियुक्त स्वयं हूं गवाह औ वकील खड़ा,
किसी लालीपाप में न मुझको चपेटिये ।
बन्द कर बात सुन चुका करतूत तेरी,
मेरी अस्मिता को अब और न कुरेदिये ।।

(१३५)

नैतिक धरम लेशमात्र अवशेष यदि,
शर्म खाके 'सर' तुम्हें मर जाना चाहिए ।
आप सरनाम गणमान्य बुद्धिजीवियों में,
केला के-से पात सा विफर जाना चाहिए ।
असल पिता की अवलाद[1] का गरूर[2] यदि,
धर्म पद त्याग के उतर जाना चाहिए ।
खोटे जन तुमसे बलात करवाते न्याय,
तुमको तो इससे मुकर जाना चाहिए ।।

◆

(१३६)

तीज तिउहार भी हमारे खलते हैं इन्हें,
ऐसे खलनायकों का दम्भ छीन लूंगा मैं ।
झूठे-मूठे मढ़के मुकदमे बने हैं वीर,
ऐसे बलवानों से प्रबन्ध छीन लूंगा मैं ।
गर्व करते हैं सैन्य शक्ति की विशालता पे,
सारा वरचस्व अविलम्ब छीन लूंगा मैं ।
मान अभिमान औ प्रगल्भ चूर-चूरकर
खुशहाली पूर्ण हलचल छीन लूंगा मैं ।।

---

१. संतान २. स्वाभिमान

(१३७)

जज एटकिन्सन ने कहा अभियुक्त सुन,
फाँसी की सजा के तुम दोषी सिद्ध हो गये ।
उबल रहा था लावा क्रोध नफरत का जो,
उससे विभूत भाव और शुद्ध हो गये ।
डायर को मारा सारा नियम बिसारा मैन,
मानवीय चेतना के क्यों विरूद्ध हो गये ।
ब्रिटिश का नाश हो, हैं दोगले हरामी मूढ़,
रोम-रोम ऊधम के क्रुद्ध-क्रुद्ध हो गये ।।

◆

(१३८)

डायर को मारने का हत्या अभियुक्त नहीं,
इसे अति पावन सुकर्म मानता हूं मैं ।
जड़ मूल रोग का उखाड़ना जरूरी इसे,
छूत की बीमारियों का जर्म मानता हूं मैं ।
शास्वत नियम आना जाना जग में प्रसिद्ध,
क्रिया प्रतिक्रिया का ही टर्म मानता हूं मैं ।
नियम है आपका न जानूं पहचानूं उसे,
हत्या के लिये ही हत्या धर्म मानता हूं मैं ।।

(१३९)

साल दस बीस कैद या कि मृत्युदण्ड मिले,
इसकी न परवाह रंच लिये साथ हूं ।
निज करतव्य में निरत अनुपालन में,
मूर्दाबाद बोलता हूँ, सबल सनाथ हूं ।
सत्याग्रहियों निहत्थों पर है चलाई गन,
आह की उपज का अनोखा उन्माद हूं ।
खाली, खाली हाथ खाली नहीं है हमारा, खल,
बलिदानियों का कर्मशील क्रुद्ध हाथ हूं ।

◆

(१४०)

संयम से बात कहो अपनी जबान तुम,
कोर्ट मर्यादा को भी ध्यान देना चाहिए ।
भाव बल तर्क काम करता नहीं है यहां,
बात-बात का सबूत साक्ष्य देना चाहिए ।
बक-बक करना तो अर्थहीन होगा मैन,
बात का निचोड़ मात्र भाष्य देना चाहिए ।
धरम तुला है यह न्याय मिलता जहां पै,
उपदेश मूल के उपास्य देना चाहिए ।।

(१४१)

बात कहो कहनी हो निज के बचाव हेतु,
साक्ष्य भरपूर इजलास को दिखाइये ।
यहाँ चीखने का लाभ कोई भी मिलेगा नहीं,
कोरी-कोरी बातों से न मुझको रिझाइये ।
प्रतिपक्ष ने दिया अनेकानेक साक्ष्य हमें,
झूठा हो तो उसका सबूत ला जुटाइये ।
एक-एक क्षण मूल्यवान है अदालत का,
नौजवान सत्य न कदापि झुठलाइये ॥

◆

(१४२)

मैं तो परदेश में न कोई है हमारा यहाँ
कौन सा साबूत दिखलाऊँ खोज-खोज के ।
मेरी है हिरासत कठोर पहरों के बीच,
लाऊंगा गवाह कब कैसे खोज-खोज के ।
आप मुझे दोषी ठहरायेंगे ही, जानता हूँ,
माथा पच्ची करे कौन व्यर्थ खोज-खोज के ।
पक्षधर मेरी मातृभूमि एकमात्र यहां,
हार गयी, मुझको हताशा खोज-खोज के ॥

(१४३)

राजे महाराजों को लड़ाया हथियाया उन्हें,
अपनी गिरफ्त में फंसाया पहचान के ।
साझेदारियों से निज सत्ता को जमाया खूब,
धज्जियाँ उड़ाया अंगरेजी संविधान के ।
भूतल के वासियों का ऐसा उलझाया मन,
दिन में दिखाये गये तारे आसमान के ।
तोड़ सकते नहीं हमारी लालसा के तार,
हम हैं सुजान स्वाभिमान राष्ट्रगान के ।।

◆

(१४४)

चीखकर बोला वीर मौत की न परवाह,
आयेगी तो मेरे सिर ताज धर जायेगी ।
सोच किसी बात की न हमको पड़ी है अब,
मीचु भी तो एक बार देख डर जायेगी ।
घूसा मार रेलिंग पै तड़प सुनाके कहा,
सिख की आवाज सीमा पार कर जायेगी ।
मेरी मातृभूमि ऐसे अधमों की हो गुलाम,
विजय हमेशा हिन्द के ही घर जायेगी ।।

(१४५)

वही काम किया जो कि करना उसे था मान्य,
पूत शूरवीरों की कथा कृतित्व हो गया ।
निज गुरु भगत[1] से मिलने को चाहता था,
उसी के निमित्त का सही निमित्त हो गया ।
निकल झरोखों से झरी थी सूचना तुरन्त,
मौत से विवाह हेतु वो प्रवृत्त हो गया ।
सिख बन्धुओं ने कुछ धन को जुटाया और
मामले की पैरबी में दत्त चित्त हो गया ।।

◆

(१४६)

इधर थी चिंता कैसे ऊधम छुड़ाया जाये,
ग्रन्थी मित्र जोहल का मन भी उदास था ।
उधर उलझता गया था केस क्राइम का,
कोई और चारा दिखता न आस-पास था ।
अधिवक्ता कोई भी न लेता केस हाथ निज,
और भी न कोई अन्य प्राणियों में खास था ।
नार्थ बेम्बली की फीस मंहगी बड़ी थी किन्तु,
बिन्दु-बिन्दु कामना का प्रबल प्रयास था ।।

---

१. भगत सिंह

(१४७)

कार्यवाही चालू थी मुकदमे की जोरदार,
हो रहा प्रहार अभियुक्त को फंसाने का ।
पैरवी में लगा सारा अमला प्रशासन का,
कोर्ट में बताया गया कातिल जमाने का ।
ऊधम के पक्ष में थी कार्यवाही शून्यवत
धीरे-धीरे वक्त बढ़ा फैसला सुनाने का ।
भरपूर शक्ति से लड़ी लड़ाई आरपार
परवाह किया कहीं ठौर न ठिकाने का ।।

◆

(१४८)

चिंतित नहीं हूं भयभीत भी कदापि नहीं,
बरबस बरतानियों का हुआ काल हूं ।
गंदे और घिनौने कूकरों को दुरियाने हेतु,
ओलवेली क्रिमिनल कोर्ट की मिशाल हूं ।
चला प्राण देने हेतु धरके पवित्र ध्येय
ऐसा महाकाल बन आ गया भूचाल हूं ।
मैं तो हूं मुहम्मद आजाद सिंह नाम शुद्ध,
क्रूर क्रूरता का ठांव-ठांव पै सवाल हूं ।।

(१४९)

जाया मत करो वक्त कीमती अदालत का,
मामले से जुड़ी बात का बयान कीजिये ।
कहा आपने सुनाने को तो मैं सुनाने लगा,
बिन्दु-बिन्दु पर 'सर' पूरा ध्यान दीजिए ।
डायर ने मारा है अनेक निरदोषियों को,
न्यायाधीश आप न्याय तो समान कीजिये ।
हाथों को उठाया तो उठाया क्रूर पापी पर,
इसका कदापि न कहीं प्रमान दीजिए ।।

◆

(१५०)

कहा आपने है बात अपनी बताऊं तुम्हें,
अस्तु न्यायाधीश कान खोल सुन लीजिए ।
रुष्ट होइये न सच सुनना पड़ेगा किन्तु,
सत्य का जवाब सत्य बोल सुन लीजिये ।
कोई न सुकृत अंगरेजों ने किया है 'सर',
आप न्यायदाता हो ये कौल सुन लीजिये ।
जुलम ढहाते रोज-रोज दीन हीनों पर,
उनकी कराह मेल-जोल सुन लीजिये ।।

(१५१)

पक्ष कमजोर प्रतिपक्ष की गवाहियों का,
इसकी न लेशमात्र चिन्ता उसको रही ।
गर्व से मरेगा देश के निमित्त ऊधम ये,
पूर्ण कार्य करने में आस मनको रही ।
सबल प्रयत्न किया प्रतिशोध लेने हेतु,
खुश होंगे मेरे से अपेक्षा जिनको रही ।
मचा है बवेला यहां सजेगा सवेरा वहां,
'ताड' बनने की अभिलाषा 'तिल' को रही ।।

◆

(१५२)

पंचदश मार्च को लिखा था पत्र जोहल को,
भारतीय पत्रों पुस्तकों को मांगता हुआ ।
आशय समझ कुछ दिवस के बाद वह,
प्रेषित किया था समाधान आंकता हुआ ।
ऊधम ने बीस मार्च को लिखा था धन्यवाद,
पृष्ठ-पृष्ठ पढ़ा आत्मज्ञान बांचता हुआ ।
भारत का पूत पुलकित कारागार बीच,
बढ़ता था मानो सप्त सिन्धु लांघता हुआ ।

(१५३)

प्रतिपक्ष का वकील अरजी लगाता नित्य,
करता प्रहार दण्ड संहिता की तीर से ।
कार्यवाही निज मजबूत करता गया था,
सफल बचाव हो न पाया शमसीर से ।
आयी अड़चने अनेक जिनके निवारण में,
बीतते गये थे दिन जोहल अधीर के ।
हारा मित्र करके प्रयास बार-बार किन्तु,
जेल में मिलाई हो न पायी उस वीर से ।।

◆

(१५४)

मिल सकते हैं कैदियों से कुछ लोग यहां,
ऐसा प्रावधान हो गया है अब जेल में ।
प्रमुख पुरोहित हैं जत्था के सचिव आप,
समय निकाल मिल लेना अब जेल में ।
सम्भव था उसने मंगाई हो विशिष्ट वस्तु,
जिससे खिला सके विशेष गुल जेल में ।
मिस्टर जहाल जा सके न खास बिन्दु तक,
पुस्तकों से ही हुए निहाल तब जेल में ।।

(१५५)

पौण्ड दस और तीस मार्च को प्रदान किया,
नार्थ बेम्वली को केस करने बचाव में ।
काम तहरीर कोई आ सकी न पक्ष हेतु,
सारी तकरीर बहती गयी बहाव में ।
डायर की हत्या जानबूझकर किया था ही,
हां कहा था वीर धीर भाव के प्रभाव में ।
और अन्य चश्मदीद लोगों के बयान बीच,
ऊधम को कातिल कहा गया सुझाव में ।।

◆

(१५६)

जेल रक्षकों के मन धुकुर-पुकुर होते,
एक दूसरे का मुख देखते खड़े रहे ।
जीवट का धनी धैर्यवान भी प्रबल किन्तु,
ऊष्ण स्वांस में ही, हाथ सेकते खड़े रहे ।
आनन सजीला, गरवीला चौड़ी छाती अति,
बात पर बात, बात फेंकते खड़े रहे ।
रात-दिन सजग प्रहरियों के पग-पग,
बैरक से बैरक को रेंगते खड़े रहे ।।

(१५७)

राज छिपा बार-बार पुस्तकों की मांग में था,
जत्था के सचिव किन्तु उसको न दे सके ।
ऐसी मनसा जतायी पोथी पर हाथ रख,
शुद्ध मन संयम शपथ मंत्र ले सके ।
जेल अधिकारियों को धमकी दिया कठोर,
कोप के प्रभाव से उसे न कुछ दे सके ।
उठी थी तरंग शासकों के महासागर में,
डूबी नाव मध्य उस पार भी न खे सके ।।

◆

सप्तम् सर्ग

अमर पर्व

आरत भारत के यश पावन हेतु वो बाण चलाना ही सीखा।
पास न आई कदापि निराशा जो आशा पै प्राण लगाना ही सीखा।
अन्य प्रलोभन फीके रहे वह गाँव को त्राण दिलाना ही सीखा।
सम्मुख देश की अस्मिता के, जग में निरमाण कराना ही सीखा।

(१५८)

भरा कूट-कूट अनुराग देशवासियों में,
रिश्ता भाइयों सा वह सबमें बनाये था।
माया मोहिनी को त्याग, राग रागिनी को छोड़,
आन-बान-शान पूरी दांव पै लगाये था।
हुये जो विलासिता के रोगी मूढ़ भोगी दुष्ट,
उनको सताया जो कि सबको सताये था।
हरीकीरतशाह नाम वाली चाहता किताब,
लेने को शपथ इच्छा ऊधम जताये था॥

◆

(१५६)

ऐसा एक राग जाग उठा मृदु जीवन में,
जिसकी न कोई कभी कल्पना विचार में।
धूल जमती गयी थी घटना पे मन्द-मन्द,
जा चुकी थी नाव पूरी-पूरी मंझधार में।
होते हैं प्रकाशित वे जीवन के उत्तरार्ध,
विपलवकारी स्वर गूंजते उभार में।
सारा जग जाना पहचाना तब ऊधम को,
गिरवीं धरा था प्राण बाग के उधार में॥

(१६०)

शोर चहुंओर एक ऊधम ने डायर का,
करके तमाम काम नाम चमका दिया ।
नाहर बने जो घर बाहर अकूत शक्ति
गोरों की जमात पे धमक धमका दिया ।
शायर, सपूत, सिंह लीक गढ़ते हैं सदा,
भारती के पूतन का जोश भभका दिया ।
होने को शहीद मातृभूमि के पुजारियों में,
देश राग वृत्ति घनघोर उमका दिया ।।

◆

(१६१)

ब्रिक्सटन जेल में मिलाई के प्रयास सब,
विफल हुये थे उस ऊधम के मीत के ।
मिलन की चाह थी प्रबल, बलहीन हुई,
पाये भी न अन्तिम वचन मीत-मीत के ।
मेनन, बसोटन, हिचिन्सन थे पक्षकार,
कर न सके बचाव ऐसे मन मीत के ।
दूर तन से था मन-मन से सदैव पास,
वचन-मनन-अनुगमन सुमीत के ।

(१६२)

हीले, जानसेन, डेनियल, हेनरी तथापि,
विलियम ब्रे, सली, अरार, बुहतेरे थे।
डाकटर, सैकी, मरजोरी, अधिकारी और,
इसावेले, फिस, क्रेन्च, बहुत चितेरे थे।
विन्यम हरी, रिचेज पुलिस जवान दल,
देने को गवाही मुंह अपना उकेरे थे।
औरों के भी अतिरिक्त उसका निजी बयान,
उसके विरूद्ध अति हो गये घनेरे थे।।

◆

(१६३)

डूब गया संसमृतियों में वह एक क्षण,
आंखों के समक्ष असि धार देखने लगा।
माता औ पिता का प्यार भीनी-भीनी रसधार,
गांव का सुहाना भिनसार देखने लगा।
वात्सल्य का विछोह प्यारा गुरुद्वारा वह,
उससे जुड़ाव सरोकार देखने लगा।
पाठन पठन और हंसना-हंसाना नित्य,
शीत धूप सावनी बहार देखने लगा।।

(१६४)

बाग जलियां की क्रूर अकथ कहानी बीच,
क्रांतिकारी वीरों का सुभाव देखने लगा ।
डायर को मारना औ लेना प्रतिशोध तथा,
कहीं कहीं अपना विभाव देखने लगा ।
जाना अमरीका लौटकर के सुनाम आना,
फिर इंगलैंड का लुभाव देखने लगा ।
जोहल मिलन अस्त्र-शस्त्र हथियाना और,
कैक्सटन हाल का जमाव देखने लगा ।।

◆

(१६५)

नाटक का पटाक्षेप, मातृभूमि की उसांस,
जेल की दीवार का आकार देखने लगा ।
आपस में नोक-झोंक, जज से बचनयुद्ध,
अन्तस का विपुल उभार देखने लगा ।
चीत्कार आहतों का पोथियों से प्यार और,
नयनों में दृश्य वो अपार देखने लगा ।
निपट निरंकुश नकारे अँगरेजन पै,
भारतीय वीरों का प्रहार देखने लगा ।।

(१६६)

बारह जून चालीस को हँसते विहँसते ही

मातृभूमि के लिये अमर वीर हो गया।

देश भक्त जागा बिना नागा के प्रबल शक्ति,

नस तोड़ने के हेतु भी अधीर हो गया।

गूंज उठी जन-जन बन्देमातरम् ध्वनि,

बच्चा-बच्चा देश का यहाँ कबीर हो गया।

बना आन-वान-शान उनका समूहगान,

बलिदानियों का बल पा अमीर हो गया।।

◆

(१६७)

साम्राज्यवाद की घिनौनी शासकीयता में,

लोग मरते दिखे हैं भरत के देश में।

और भिन्न-भिन्न यातनाओं के शिकार बन,

भरते मरे हैं कर भरत के देश में।

गये हो पराये परदेशियों की भांति जन,

सपना सभी है कुछ भरत के देश में।

माना था विरोध, दहलाया समझाने हेतु,

भारती रहेगी मुक्त भरत के देश में।

(१६८)

निडर शहीदों, देशवासियों अमरवीर,
ऊधम का सबको प्रणाम बार-बार है ।
मेरी मातृभूमि, मेरे मित्र, मेरे साथी गण,
ऊधम का शिरसा नमामि बार-बार है ।
मिलूंगा बताऊंगा समस्त डायरी का हाल,
क्रांतिवीर जनों को सलाम बार-बार है ।
आऊंगा मैं शीघ्र अवशेष कार्य करने को,
साहस का मेरा ये कलाम बार-बार है ।।

***

"दुनिया खाने, पीने, पहनने, ओढ़ने तथा उपभोग करने की वस्तुओं का व्यापार करती है । पर कुछ दीवाने चिल्लाते फिरते हैं 'सरफरोसी की तमन्ना अब हमारे दिल में है ।' ऐसे कुशल किन्तु औघड़ व्यापारी भी कहीं देखे हैं । अगर एक बार देख लें तो कृतकृत्य हो जायें ।"

कवि परिचय
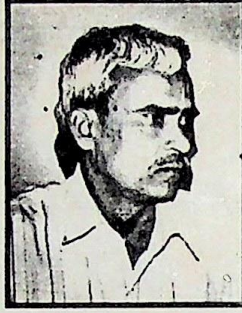
नाम :

हरी नारायण तिवारी

पिता :

श्री बल्देव तिवारी

शिक्षा :

एम. ए. हिन्दी कानपुर विश्वविधालय

जन्म तिथि :

६ जून १६५१

स्थायी पता :

ग्राम - गौरा, पो० दियरा

जनपद - सुलतानपुर (उ. प्र.)

प्रकाशित काव्य :

दीपनगर सौन्दर्य

अप्रकाशित काव्य :

★ 'लहर लहर तक' खण्ड काव्य

★ भारत दर्शन - पर्यटन काव्य

विशेष :

विभिन्न साहित्यिक संस्थाओं द्वारा देश प्रदेश में सम्मानित, पत्र-पत्रिकाओं में लेख, कवितायें प्रकाशित

सम्पर्क सूत्र :

बी - ११२-११३ विश्व बैंक कालोनी बर्रा. कानपुर-२७ एवं 'आंज' हिन्दी दैनिक ७६/७५ बांसमंडी, कानपुर - १